निवेदन

इस पुस्तक में मनुष्य शरीर की बिजली द्वारा जो कार्य दैनिक जीवन में होते हैं, उन पर प्रकाश डाला गया है। जिस प्रकार स्वास्थ्य विज्ञान जानना हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है, उसी प्रकार उसे अपनी सबसे मूल्यवान वस्तु 'शारीरिक विद्युत' के बारे में जानना चाहिए। कितने दुख की बात है कि हम में से बहुत से सुशिक्षित लोग भी इस महत्वपूर्ण विज्ञान की मोटी मोटी बातों तक से अपरिचित हैं और इसकी जानकारी के अभाव में गलत मार्गों को अपना कर दुख उठाते रहते हैं।

इस महाविज्ञान को पूरी तरह न तो इस छोटी सी पुस्तक में समझाया जा सकता था और न उन लोगों को बहुत अधिक गहरी एवं विस्तृत बातों को जानना रुचेगा, जिन तक कि हम इस पुस्तक को पहुँचाने की इच्छा रखते हैं। इसलिए मोटे तौर से रोजमर्रा के जीवन में काम आने वाली बातों में मानवीय विद्युत का क्या और किस प्रकार असर होता है, इस बात को समझाने का प्रयत्न किया गया है।

हर बात को विज्ञान की तराजू से तोलने वालों को धर्म और प्रचीन रीति नीतियोंके औचित्यका अनुभव करनेका अवसर मिलेगा और वे देखेंगे कि भारतीय धर्म शास्त्र एवं आचार शास्त्र अन्ध विश्वास या दंभ पर नहीं वरन् मनोविज्ञान एवं साइंस के गंभीर अभिज्ञान पर अवलंबित है। इस पुस्तक में एक गूढ़ विज्ञान की सरल सी व्याख्या की गई है। किसी विधि निषेध पर विशेष जोर नहीं दिया गया है, ताकि सार्वसाधारण निष्पक्ष रूप से इस पर विचार कर सकें। अपने विषय की यह निराली पुस्तक हिन्दी साहित्य के एक अंग को पूर्ण करेगी और जिज्ञासुओं की कई समस्याओं का समाधान करेगी, ऐसा हमारा अनुमान है।

मथुरा, रामनवमी १९९८ वि०] —श्रीराम शर्मा।

लेखक—

पं० श्रीराम शर्मा

सम्पादक "अखंड-ज्योति" मथुरा ।

मानवीय विद्युत के चमत्कार

आत्म तेज का परिचय ।

मनुष्य का शरीर एक अच्छा खासा बिजलीघर है । जैसे बिजलीघर में से सारे शहर के लिए तार लगे होते हैं, उसी प्रकार मस्तिष्क में से निकल कर जो पतले पतले तार समस्त शरीर में जाल की तरह फैल गये हैं, उन्हें ज्ञान तन्तु कहा जाता है । यह टेलीफोन का काम करते हैं । देह को जरा सी भी कहीं छू दो तो यह तार फौरन मस्तिष्क को सूचना देंगे और वहां बैठा हुआ अधिकारी क्षण भर में फैसला करेगा कि अब क्या करना चाहिए । पाँव में चींटी काट खावे तो तुरन्त ही ज्ञान-तन्तु इसकी रिपोर्ट मस्तिष्क में पहुँचावेंगे और मतिष्क बिना एक क्षण का विलम्ब लगाये उस चींटी को हटाने और घायल जगह को अच्छा करने का उपाय करेगा । देखा जाता है कि चींटी के काटते ही हम अपना पैर फटकारते हैं, जिससे चींटी छूटकर गिर पड़े या हाथ को उस स्थान पर ले जाकर वहां खुजलाने लगते हैं, जिससे चींटी छूट जाय और काटे हुए स्थान का विष खुजलाने से निकल जाय एवं रगड़ से वहां खून का दौरा विशेष रूप से होने लगे, जिससे घाव भरने में शीघ्रता हो । यह ज्ञान-तन्तु सर्दी, गर्मी, हवा, नमी आदि की भी सूचना पहुँचाते हैं, जिसके आधार पर उनसे शरीर की रक्षा का कपड़े, छाते आदि से प्रबंध किया जाता है । कुछ तार इनसे मोटे हैं,

जिन्हें नसें कहते हैं। कहने को तो यह खून बहाने वाली नालियां कहीं जाती हैं, परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर यह विद्युत बहाने वाले तारहैं। जब इन नसोंकी बिजली मन्दी पड़ जातीहैं, तो खून बहता रहता है पर शरीर में बड़ी जड़ता या अकड़न आजाती है, उनमें दर्द होने लगता है। गठिया की बीमारी में या अन्य नसों सम्बन्धी रोगों में कहीं खून का बहना बंद नहीं होता (क्योंकि खून न पहुँचने पर तो वह स्थान मर ही जायगा) बरन् नसों की बिजली मन्द पड़ जाने के कारण वे निर्बल और कठोर होजाती है, जब उन पर रक्त का या अन्य कार्यों का दबाव पड़ता है तो उन्हें बर्दाश्त नहीं होता और दर्द, दाह या उत्तेजना का अनुभव करने लगती हैं। रक्त या मांस में जो जीवनी शक्ति या सजीव तत्व है, वह एक प्रकार की बिजली है। शरीर से बाहर निकाल लेने पर जब रक्त की बिजली हवा में उड़ जाती है तो वही वस्तु जो एक क्षण पूर्व बड़ी सक्रिय थी, दूसरे ही क्षण निर्जीव, मृत होकर सड़ने एवं दुर्गन्ध फैलाने लगती है। प्राणान्त होने के उपरान्त शरीर की सब धातुऐं मिट्टी होजाती हैं। किसी प्राणी का वध किया जाय तो उसके शरीर की बिजली तुरन्त ही समाप्त नहीं होजाती, बरन् धीरे धीरे घटती है। जिस अनुपात से वह घटती जाती है, उसी प्रकार मांस निर्जीव होता जाता है। अधिक समय तक रखा हुआ मांस जब दूषित; विद्युतहीन होजाता है, तब वह बेकार होजाता है। खाने के काम नहीं आ सकता।

आत्मा इस विद्युत शक्ति का आद्य बीज है। छोटे से शरीर की थोड़ी सी शक्ति पर दृष्टि पात करने से आत्मा एक बहुत छोटी वस्तु प्रतीत होती है, क्योंकि उसके चलने फिरने, बोझ उठाने, काम करने, सोचने आदि की शक्तियां बहुत सीमित

मालूम पड़ती है। कई बातों में तो मनुष्य की अपेक्षा अन्य जीव जन्तु अधिक शक्ति रखते हैं। मोटी दृष्टि से देखने में प्राणी चाहे जितना तुच्छ प्रतीत क्यों न हो, पर उसमें एक बड़ा ही अद्भुत गुण है, वह उसकी उत्पादन शक्ति। बरगद का छोटा सा बीज अपने पेट में एक बड़ा भारी विशाल वृक्ष छिपाये रहता है और जब भी उसे अवसर मिलता है, अपनी उस छिपी हुई सम्पत्ति को प्रगट कर देता है। जीव चैतन्य है और अपना पोषण अनन्त चेतना से प्राप्त करता है, इसलिए उसके अन्दर वह शक्ति है कि अपनी आकर्षण शक्ति को चाहे जितनी बढ़ाले और फिर उसके जरिये जिस वस्तु को जितनी मात्रा में चाहे अपने पास खींच कर इकट्ठी करले। बरगद के बीज में महान् वृक्ष उत्पन्न करने की शक्ति है, इसे सब जानते हैं, परन्तु कई बार बीज निरर्थक नष्ट हो जाते हैं, उनका अंकुर निकलते ही झुलस जाता है या कुछ ही बढ़ने पर उनका पौधा मुरझा कर बरबाद होजाता है। इसका कारण बीज की अयोग्यता नहीं, वरन् उत्पादन क्रिया की त्रुटि है। असंख्य मनुष्य अपना जीवन बड़ी निकृष्टता के साथ बिताते हैं, उनका जीवन ऐसा दुखमय और नारकीय होता है कि यह मानने में संदेह उठता है कि मनुष्य की आत्मा, क्या परमात्मा के दिव्य गुणों से भरी हुई है?

वेदान्त कहता है कि जीव और ईश्वर एक है। परन्तु हम मनुष्य में परमात्मा के गुणों का अभाव देखते हैं और उपरोक्त शास्त्र वचन पर अविश्वास करते हैं। हमें जानना चाहिए कि वर्तमान स्थिति में मनुष्य बीज है और परमात्मा वृक्ष। मोटे तौर से वृक्ष और बीज की बराबरी की तुलना नहीं हो सकती, परन्तु तत्वतः यह भेद सत्य नहीं है। अपनी उत्पादन शक्ति का ठीक तरह प्रयोग न करने से ही मनुष्य मलीन अवस्था में पड़ा

रहता है और अपना विकास नहीं कर पाता। उसे इस बात की पूरी आजादी है कि अपनी उत्पादन शक्ति को बढ़ावे, चाहे जितनी और चाहे जिस दिशा में बढ़ावे। मन, आत्मा की एक इन्द्रिय है। मन का धर्म इच्छाऐं उत्पन्न करना है। मन में इच्छा हुई कि दिल्ली का किला देखें, तुरन्त ही उसकी सेविका कल्पना शक्ति ने उस किले का एक कल्पना चित्र सामने खड़ा कर दिया। अब यदि मन की इच्छा निर्बल थी तो वह चित्र कुछ क्षण बाद विलीन हो जायगा और यह इच्छा बलवान थी तो किले के उस मानसिक चित्र को पोषण मिलेगा। इच्छा शक्ति की खाद खुराक से यह चित्र कुछ ही समय में परिपुष्ट हो जायगा और दिल्ली के किले की वास्तविक प्रतिमा के साथ अपनी घनिष्टता स्थापित करनें लगेगा। बुद्धि को अनेक बातें अपने आप ऐसी सूझ पड़ने लगेंगी जो उस किले से संबन्ध रखती हैं, बुद्धि की स्वच्छता के अनुपात में इनमें से अधिकांश सत्य होंगी। यदि उस मानसिक चित्र को इच्छा का पोषण बराबर मिलता रहे, तो बाहर की परिस्थितियाँ कितनी ही विपरीत हों, धीरे धीरे वह आकर्षक चित्र अपना काम करता रहेगा और परिस्थितियों को अनुकूल करके एक दिन दिल्ली के किले का दर्शन करा देगा। इच्छा उठने के क्षण से लेकर वह कार्य पूरा होने तक मार्ग की करोड़ों छोटी-मोटी बाधाओं को साफ करने में वह आकर्षण कितने कितने संघर्ष करता है, इसे हम नहीं जान पाते। यदि हमारी आँखें इच्छा के आकर्षण से सफलता मिलने में कितने मानसिक कार्य होते हैं, मानसिक विद्युत असंख्य प्रकार की शारीरिक मानसिक तथा बाहरी परिस्थितियों को कितने बलपूर्वक चीर चीर कर अपना रास्ता साफ करती हैं, इसे देख पातीं तो हम समझते कि बेशक हमारे अपने अन्दर अत्यन्त ही प्रभावशाली चुम्बक शक्ति भरी हुई है।

शरीर की सारी हलचलें उसी बिजली का एक बहुत छोटा कार्य है। हर शरीर में इतनी गर्मी देखी जाती है, कि उससे १ घंटे में करीब १ मन वर्फ घुल सके। यह गर्मी कहाँ से आती है? तुम्हें जानना चाहिये कि भीतर जो बिजलीघर चल रहा है, यह उसका धुआँ धप्पड़ और गर्द गुबार है। भीतर तो इतनी गर्मी है, जितनी में पृथ्वी पर पैदा होने वाला कोई जीव जिंदा नहीं रह सकता। कई मनुष्यों के चहरे पर ऐसा तेज होता है, जिसके आगे तलवार और बन्दूकें कुंठित हो जाती हैं, यह तेज सफेदी या चमक नहीं है, वरन् प्रचण्ड विद्युत धारा है। जब एक मनुष्य हजारों विरोधियों के बीज सफलता प्राप्त करके निकलता है, तो यह कार्य उसके हाड़ मांस का नहीं, वरन आत्मतेज का होता है। अगले अध्याय में हम बतायेंगे कि इस आत्म विद्युत को सूक्ष्म इन्द्रियों से ही नहीं, वरन् इन मोटा इन्द्रियों आँख, नाक, त्वचा आदि से भी अनुभव किया जा सकता है। यहाँ तो हमारा अभिप्राय यह बताने का है कि शरीर की सारी हरकतें उस विद्युत के द्वारा हो रही हैं, जो मन की महान् विद्युत का एक अंश है। एक डाक्टर ने हिसाब लगा कर बताया है, कि हमारे शारीरिक और मानसिक कार्यों को चलाने में जितनी विद्युत शक्ति खर्च होती है, उतनी से एक बड़ा मिल चल सकता है। छोटे बच्चे में भी इतनी बिजली काम करती है, जितनी से रेल का इञ्जन दौड़ सके। शरीर के कामों में मन की एक तिहाई से भी कम बिजली खर्च होती है। शेष भाग में से अधिकाँश हमारी मानसिक इच्छाओं को पूरा करने के प्रयत्न में लगा रहता है।

'जो जैसा बनना चाहता है, वैसा बन जाता है।' इसका रहस्य यह है कि मन जैसी इच्छा करता है, कल्पना वैसे मान-

सिक चित्र रचती है और लगातार की इच्छा से इन चित्रों में ऐसा चुम्बक पैदा हो जाता है, कि वैसे ही भौतिक पदार्थों को अपने निकट खींचते हैं। किसी वस्तु को लाने, उठाने, ले जाने, प्राप्त करने में सदैव कुछ प्रयत्न करना पड़ता है। इच्छा की तीव्रता के अनुसार मन की विद्युत धारा चारों ओर उड़ उड़ कर अनुकूल वातावरण तैयार करती है। शरीर में वैसी क्रिया उत्पन्न करती है, बुद्धि में तरकीबें उठाती है, संकटों का मुकाबिला करने योग्य साहस देती है और ऐसी ऐसी गुप्त सुविधायें उपस्थित करती है, जिन्हें हम जान भी नहीं पाते। कहते हैं, कि अमुक मनुष्य ने ऐसे ऐसे प्रयत्न करके अमुक कार्य पूरा किया। तत्व-दर्शी जानता है कि यह प्रयत्न उसके शरीर ने नहीं किये, वरन् मन ने किये हैं। यदि उसकी तीव्र इच्छा न होती तो शायद ही वह पूरा होता। देखते हैं, कि कई आदमी मामूली से कामों को भी ठीक तरह नहीं कर पाते, उन्हें छोटा सा काम करने में घंटों लग जाते हैं, करने के बाद थकान अनुभव करते हैं या झुंझलाते हैं, समझना चाहिये कि इनके मन की इच्छा शक्ति ने इस कार्य को पूरा करने में सहयोग नहीं दिया, इन्होंने केवल शरीर को घसीटा है, वह जैसा कुछ कर सकता था, किया है। देह के पास तो अपना भीतर का काम ही करने को काफी है, उसीसे बाहर के काम भी लिये जाँय तो जरूर थकान या झुंझलाहट आवेगी। इसलिये याद रखना चाहिये कि किसी कार्य का सफलता पूर्वक होना, प्रसन्नता पूर्वक होना, जल्द होना, इस बात पर निर्भर करता है, कि उसके लिये अधिक से अधिक मन के इच्छा-आकर्षण का उपयोग किया जाय, क्योंकि यही तो उत्पादन का मूल स्रोत है। इच्छा की तीव्रता से क्रिया उत्पन्न होती है और यदि क्रिया का बुद्धिमत्ता पूर्वक उपयोग किया जाय तो कोई कारण नहीं, कि कठिन से कठिन बाधाऐं मार्ग में से न हट जावें।

नेपोलियन कहा करता था, कि 'असंम्भव शब्द मूर्खों के कोष में है।' चाहे उक्त कथन में कुछ अत्युक्ति भले ही हो, पर सत्य का अंश अधिक है।

आत्मा को सर्व शक्तिमान इस लिये कहा गया है, कि इच्छा के द्वारा वह शक्ति उत्पन्न करती है और बुद्धि के द्वारा उसका ठीक उपयोग कर लेती है। यदि बीज में उत्पन्न करने की शक्ति हो और उसका उत्पादन ठीक प्रकार से हो, तो महान् बरगद का वृक्ष उत्पन्न हो जायगा। वृक्ष की अपेक्षा आत्मा अधिक चैतन्य और स्वतंत्र है, इसलिये उसकी कार्य क्षमता भी दुरूह दिशाओं तक हो सकती है। संसार में मनुष्यों ने ही अनेक वैज्ञानिक आविष्कार किये हैं, ज्ञान को खोज की है और प्रकृति पर विजय प्राप्त की है, इसका कारण कोई आकस्मिक घटना नहीं है, वरन् यह उनकी इच्छा और बुद्धि के सामञ्जस्य का फल है और यह दोनों ही वस्तुऐं आत्मा की प्रचण्ड विद्युत के उपकरण हैं। इसलिये पाठको! अपनी विद्युत शक्ति का ज्ञान प्राप्त करो, उसका अनुसंधान करो, उस पर विचार करो और कार्य में लाने का अभ्यास करो। तुम जैसे बनना चाहते हो, अपने जीवन में जो वस्तुऐं प्राप्त करना चाहते हो, उन्हें सच्चे दिल से चाहो, सच्ची इच्छा करो, लगन के साथ उसमें मन को प्रवृत्त करो, तो तुम्हारी क्रियाऐं उसी के अनुसार बनने लगेंगी और बुद्धि उन क्रियाओं की अशुद्धता को सँभालती रहेगी, तद-नुसार सफल हो कर रहोगे। मनुष्य जीवन का वास्तविक लाभ प्राप्त करने के इच्छुको! अपनी आत्म-विद्युत को समझो, उससे ठीक प्रकार काम लेना सीखो।

मनुष्य की शारीरिक-विद्युत ।

मनुष्य के शरीर में निरन्तर एक प्रकार की बिजली का प्रवाह जारी रहता है। शरीर और मन के दैनिक कार्य संचालन होने के अतिरिक्त यह मानुषिक विद्युत प्रवाह और भी कामों में उपयोग होता है और हो सकता है। इसकी सहायता से कठिन काम पूरे किये जाते हैं, क्योंकि यह एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करके उसे प्रभावित करती और इच्छानुवर्ती बनाती है। विज्ञान द्वारा इस शक्ति का अनेक प्रकार से परीक्षण हो रहा है। अलग अलग मनुष्यों के शरीरों में जो अलग-अलग आकृतियों के तेजोवलय (Oura) देखे जाते हैं, उसके आधार पर कई योगाभ्यासी बिना असली मनुष्य को देखे उसके निकटवर्ती वातावरण का अनुभव करके ही उसके सम्बन्ध में बहुत कुछ बातें जान लेते हैं। साइन्स के अनुसार साइकोमेटरी (Psychometry) नामक एक स्वतंत्र विद्या का अविष्कार हुआ है, जिसके अनुसार आँखें बन्द करके दिव्य चक्षुओं के बल से बहुत सी गुप्त और प्रकट बातें बताई जाती हैं।

यह मानवीय विद्युत कोई कल्पना का विषय या वैज्ञानिक यंत्र से ही देखने की चीज नहीं है, वरन् यदि तुम चाहो तो खुद अपनी इन्द्रियों से अनुभव कर सकते हो और आँखों से देख सकते हो। बहुत से जिज्ञासु इस अनुभव के लिये उत्सुक रहते होंगे, इसलिए इस लेख में कुछ ऐसे ही उपाय बताये जायँगे, जिनके द्वारा उस बिजली को प्रत्यक्ष रूप में अनुभव में लाया जा सके

(१) काले पर्दे की सहायता से ।

एक अँधेरी कोठरी इस कार्य के लिए चुनो। उसमें एक कुर्सी रखकर उसकी पीठ पर गहरे काले रंग का कपड़ा लटका

दो। एक बहुत क्षीण प्रकाश का दीपक कुर्सी के आगे की तरफ़ जरा दूर रखदो ताकि कुर्सी की पीठ पर लटके हुए कपड़े पर प्रकाश न पड़ने पावे अँधेरा बना रहे। इस कपड़े के पीछे अपने लिए एक चौकी या कुर्सी बिछाओ और उस पर बैठ जाओ। अब अपने दोनों हाथों को इस प्रकार मिलाओ जैसे नमस्कार करने के लिये हाथ जोड़ते हैं। काले कपड़े और तुम्हारे हाथों के बीच एक फुट का फासला रहना चाहिये। कुर्सी के ऊपरी सिरे की सीध से एक इंच नीचे हाथों को रख कर उन्हें आपस में धीरे धीरे रगड़ना आरंभ करो और फिर इस क्रिया को उत्तरोत्तर तेज करते जाओ। ध्यान पूर्वक देखने से पता चलेगा कि झाड़ते समय एक सफेद भाप जैसा पदार्थ उनमें से निकल रहा है। कभी कभी हथेलियों की चमड़ी चमकती मालूम पड़ेगी और कभी एक दो हलकी चिनगारी सी इधर उधर बिखरती मालूम देंगी। नाखूनों के छोरों में चमक विशेष रूप से देखी जाती है। सूक्ष्म चीजों को अच्छी तरह देख सकने की इन स्थूल आंखों में अच्छी योग्यता नहीं होती और कभी कभी आंखों की रोशनी कम होने से इस प्रवाह को पूरी तरह देखने में बाँधा पड़ती है, फिर भी उस विद्युत प्रकाश को इतना तो देखा ही जा सकता है कि हमें उसके आस्तित्व में विश्वास हो जाय।

(२) आकर्षक प्रभाव।

पालथी मार कर लकड़ी की चौकी पर बैठो। कुर्सी पर बैठना हो तो पाँवों को लकड़ी के तख्ते पर रखो। जिस कुर्सी या चौकी पर बैठे हो उस में धातु की कोई ऐसी कील न लगी हो जो तुम्हारे शरीर को छूती हुई जमीन तक पहुँचती हो। इन बातों का ध्यान रखना इसलिये आवश्यक है कि तुम्हारा शरीर जमीन को छू रहा होगा या धातु की कोई वस्तु शरीर को छूती

हुई पृथ्वी तक पहुँच रही होगी तो शारीरिक विद्युत का प्रभाव जमीन में खिचने लगेगा और जिस वस्तु की परीक्षा करना चाहते हो उसे देखते में सफलता न मिलेगी ।

चौकी या कुर्सी पर पांव ऊंचे करके बैठना चाहिए। दोनों हाथों को आपस में इस प्रकार मिलाओ कि हथेलियों और उँगलियों के सिरे आपस में मिलजावें। हथेली के बीच का भाग जरा सा खुला रह सकता है। एक मिनट तक हथेली और उँगलियों के सिरों को आपस में खूब चिपकाने का प्रयत्न करो । तदुपरान्त हथेलियों को कस कर मिलाये रहते हुए उँगलियों को अलग करने का प्रयत्न करो। ऐसा करने पर चारों उँगलियों में कंपकपीं मच जायगी। वे एक दूसरे से अलग न होना चाहेंगी, किन्तु जब तुम उनका चुम्बकत्व भंग करके उन्हें अलग अलग करना चाहते हो, तो मानवीय चुबक विद्युत के आकर्षण के कारण वे काँपने लगती है । यह अनुभव बहुत सरलता से किया जा सकता है।

(३) जल का स्वाद परिवर्तन ।

एक मेज पर कांच के गिलासों में पानी भर कर रखो। उनमें से एक में अपनी उँगलियों का अग्रभाग ४-५ मिनट डुबाये रहो और इच्छा करते रहो कि तुम्हारी विद्युत शक्ति इस पानी में उतर जाय । इसके बाद,किसी कुशाग्र बुद्धि के मनुष्य को उन दोनों जल पात्रों को दिखाओ या उन जलों में से थोड़ा थोड़ा पिलाओ । वह व्यक्ति तुरंत ही बता देगा कि इस पानी के स्वादों में और चमक में कितना अंतर है।

(४) चक्र में झनझनाहट ।

एक गोल मेज के चारों ओर कुर्सियाँ लगा कर कम से कम तीन और अधिक से अधिक से सात व्यक्ति बैठें। स्थान

शान्त और क्षीण प्रकाश का हो, एक प्रहर रात्रि जाने के बाद का समय इसके लिये उत्तम है। सब लोग शान्त चित्त होकर बैठें और पॉत्र लकड़ी के तख्ते पर रखें। मेज के बीचों बीच एक काला बिन्दु बना कर सब लोग अपनी दृष्टि उस पर एकत्रित करें और दोनों हाथों के पंजे अपने पड़ोसी के पंजे में मिला मिला कर मेज के किनारों पर रखें। सब लोगों के हाथ आपस में मिलकर एक चक्र बन जाना चाहिए। बिन्दु पर शान्त चित्त से दृष्टि की एकाग्रता करने पर एक विद्युत की धारा बहने लगेगी और चक्र में बैठने वालों को हाथों में तथा शरीर के अन्य स्थानों में हलकी झनझनाहट मालूम होने लगेगी।

(५) मृत वस्तुओं को जीवित रखना।

एक ही समय के टूटे हुए दो फल या फूल या किसी मृत प्राणी के शरीर लो। एक को परीक्षा के तौर पर किसी दूसरे व्यक्ति के पास छोड़दो और दूसरे को अपने पास रखो। दूसरा व्यक्ति उसे जहाँ चाहे वहाँ रखे तुम उस वस्तु को अपने पास रखो और थोड़ी थोड़ी देर बाद उस पर जीवन रक्षा की भावना से दृष्टि पात करते रहो। इस प्रकार तुम देखोगे कि साथी की वस्तु सड़ने लगी है, किन्तु तुम्हारी वस्तु में सड़ने का ज़रा भी प्रभाव न होगा, हाँ यदि दृष्टिपात में अधिक तेजी हुई तो सूखने लगेगी।

फ्राँस के बोर्डो नगर में इस संबंध में बहुत अन्वेषण हुआ है। वहाँ एक स्त्री ने अपने अन्दर विशेष रूप से विद्युत आकर्षण पैदा कर लिया था, जिस वस्तु पर दृष्टि डालती वह कदापि न सड़ती। केवल फल फूलों पर ही नहीं, वरन् मरे हुए मेंढक, खरगोश, मछली, सुअर आदि की लाशों पर भी यह

परीक्षण किया गया। सूक्ष्म दर्शक यंत्र से हफ्तों उन लाशों की परीक्षा होती रही, पर सड़ने का एक भी चिन्ह उनमें न देखा गया। कई ऐसी सड़ी हुई वस्तुएं उस स्त्री के सामने उपस्थित की गईं जिनमें असंख्य जन्तु उत्पन्न होगये थे। स्त्री ने जब उन पर अपनी तीक्ष्ण दृष्टि डाली तो वे कृमि कुछ ही देर में मर गये।

(६) लटकती हुई वस्तु को झुलाना।

सुई के छेद में धागा पिरो कर ऊपर छत में उसे इस तरह बाँध दो, कि सुई बीच में लटकती रहे। उस कमरे में हवा के झोंके न आने पावें, इसका प्रबन्ध रखो, अब उस सुई से तीन फुट के फासले पर तुम बैठो और उस पर दृष्टि जमाओ, कुछ ही देर में उसमें हरकत होने लगेगी और जिस तरह चाहोगे, उसी तरफ वह हटने व हिलने जुलने लगेगी। जलती हुई मोम-बत्ती या दीपक की लौ को भी इसी प्रकार मानवीय विद्युत के आधार पर हिलाया झुलाया जा सकता है।

(७) जीव-जन्तुओं पर प्रतिबन्ध।

रामायण में ऐसा उल्लेख है कि लक्ष्मण जी एक रक्षित रेखा खींच कर चले जाते थे और उसके अन्दर सीता जी अकेली निर्भय होकर बठी रहती थीं। जब रावण सीता को चुराने पहुचा तो उसका इतना साहस न हुआ कि उस रेखा के अन्दर प्रवेश कर सके, अतएव उसे भिक्षुक का रूप बना कर छल से सीता को रेखा के बाहर बुलाने का षड़यंत्र रचना पड़ा। इस प्रकार की विद्युतमयी रेखाऐं हर कोई खींच सकता है, परन्तु उनमें असर अपने प्रयोक्ता के बल के अनुसार ही होगा। भूमि पर एक कोयले से कहीं छोटा सा एक गोल घेरा चक्र की तरह

खींच दो। खींचते समय उस रेखा में अपनी विद्युतमयी इच्छा का समन्वय कर दो और बैठ कर तमाशा देखो। उधर से जो चींटियाँ या इसी प्रकार के छोटे कीड़े निकलेंगे, उनके लिये यह रेखा जलती हुई बालू की तरह होगी। वे रेखा के समीप तक जाँयगे, किन्तु उलटे पांवों लौट आवेंगे, उसे पार करते उनसे न बन पड़ेगा। यदि किसी छोटे कीड़े के आस पास ऐसी रेखा खींच दी जाय तो उससे बाहर न निकला जायगा और उसके अन्दर ही घुमड़ाता रहेगा। जब उसे कोई मार्ग न मिलेगा और अपनी जान को हथेली पर रख लेगा, तब उस रेखा को पार करने को उद्यत होगा। जब वह पार करेगा, तो उसे बड़ा कष्ट होगा और निकलने के बाद ध्यानपूर्वक देखने से वह पीड़ित या पागल की तरह बेचैन दिखाई देगा।

(८) फोटो खींचना।

फोटो खींचने के जो अच्छे प्लेट आते हैं, वे आँखों की अपेक्षा प्रकाश को अधिक स्पष्ट अनुभव कर सकते हैं, किसी ऐसे अँधेरे कमरे में जाओ, जिसमें बाहर का प्रकाश बिलकुल न पहुँचता हो और जिसमें प्लेट पर बाहरी प्रकाश लग जाने की आशंका न हो। उस कमरे में जाकर एक फोटो का प्लेट खोलो और दो मिनट तक उस पर अपने हाथ का पंजा रखे रहो, बाद को प्लेट को सावधानी से ढक कर फोटोग्राफर से धुलवालो। उस पर हाथ के प्रकाश का चित्र बन जायगा।

(९) चौंका देना।

कोई व्यक्ति किसी कार्य में व्यस्त हो, तो चुपके से उसके पीछे कुछ दूरी पर जाकर खड़े हो जाओ और रीढ़ की हड्डी या गर्दन का पिछला भाग जो खुला हुआ हो, उस पर दृष्टि जमाओ और उसे चौंका देने की भावना करते रहो। वह व्यक्ति कितने ही

जरूरी काम में क्यों न लग रहा हो, अपना ध्यान हटाने को बाध्य होगा। उस स्थान को खुजलावेगा और मुड़ कर तुम्हारी ओर देखने लगेगा।

(१०) विचार उत्पन्न करना।

किसी व्यक्ति को ढीला शरीर करके शान्त चित्त से आराम के साथ बिठा दो और उसके सामने तुम बैठो। जिस प्रकार के विचार उसके मस्तिष्क में उत्पन्न करना चाहते हो, उसी प्रकार की भावनाओं का प्रवाह उसके मस्तिष्क को लक्ष करके जारी करो। तुम्हारी विद्युत उसके मन में प्रवेश पाकर वैसे ही विचारों को उत्पन्न करेगी। किसी का मन यदि बहुत चंचल और कठोर होता है, तो वह उन भावों को पूरी तरह ग्रहण नहीं कर पाता, फिर भी अधिकांश सफलता मिलती है। पूछने पर वह व्यक्ति उसी प्रकार के विचार उत्पन्न हुए स्वीकार करेगा, जैसे कि तुमने उसके लिये प्रेरित किये थे।

यह साधारण विद्युत की बात हुई। इतने अनुभव के लिये किसी विशेष अभ्यास की आवश्यकता नहीं होती। हाँ, यदि स्वभावतः तुम्हारी विद्युत प्रबल है, तो अधिक स्पष्ट अनुभव आवेंगे और निर्बल होने पर उतनी ही त्रुटि रहेगी। अभ्यास से तो इस शक्ति को बहुत अधिक बढ़ाया जा सकता है। यह शक्ति समुन्नत होने पर जीवन को प्रकाश का पुञ्ज बना देती है।

भोजन की आन्तरिक पवित्रता।

हिन्दू धर्म में खान-पान सम्बन्धी छूत-छात का विशेष विचार रखा जाता है। पवित्र व्यक्तियों के हाथ का बना हुआ

भोजन चौके में बैठ कर ग्रहण करने की शास्त्रीय प्रथा का आज उपहास किया जाता है और जूता पहन कर कुर्सी, मेज पर बैठे हुए हीन स्वभाव के लोगों के हाथ का भोजन करना सभ्यता का चिह्न समझा जाता है। इस प्रकार के भोजन का गुप्त रूप से शरीर और मन पर जो तामसी प्रभाव पड़ता है, उसका दुखद परिणाम पीछे से मनुष्यों को भोगना पड़ता है।

थियोसोफिकल सोसाइटी के प्रसिद्ध नेता महात्मा लेड बीटर ने "वस्तु की आन्तरिक दशा" (Hidden Side of Things) नामक एक बहुत ही विवेकपूर्ण पुस्तक लिखी है, उसमें वे एक स्थल पर कहते हैं—जो कुछ भोजन हम खाते हैं, वह पाचन के उपरान्त शरीर का एक भाग बन जाता है। उस भोजन पर जिस प्रकार के सूक्ष्म प्रभाव अङ्कित होते हैं, वे भी हमारे शरीर में बस जाते हैं। लोग खाद्य वस्तुओं की केवल बाहरी सफाई पर ध्यान देते हैं, किन्तु वे यह भूल जाते हैं कि बाहरी सफाई पर ध्यान देना जितना आवश्यक है, उससे कहीं अधिक आवश्यक उसकी आन्तरिक स्वच्छता पर ध्यान देना है। भारतवर्ष में भोजन की आन्तरिक स्वच्छता को अधिक महत्व दिया जाता है। हिन्दू लोग अपने से नीच विचार के लोगों के हाथ का बना हुआ या उनके साथ बैठ कर खाना इसलिये नापसंद करते हैं, कि उनके हीन विचारों से प्रभावित होने से भोजन की पवित्रता जाती रहेगी। विलायत में लोग बाहरी सफाई को ही पर्याप्त समझते हैं, वे नहीं जानते कि केवल इतने से ही भोज्य पदार्थ उत्तम गुण वाले नहीं बन जाते।

भोजन पर—उसके बनाने वाले का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। विज्ञान बताता है कि मानवीय विद्युत का सब से अधिक प्रवाह उँगली को पोरुओं में से प्रवाहित होता

है। जिस भोजन को बनाते समय बार बार हाथ से छुआ गया है, वह उसके अच्छे या बुरे असर से अवश्य ही प्रभावान्वित होगा। यह सच है कि अग्नि पर पकने से उसके बहुत से दोष जल जाते हैं, तो भी वह सम्पूर्ण प्रभाव से रहित नहीं हो जाता। केवल छूने से ही भोजन पर वैयक्तिक विद्यु त असर नहीं पड़ा वरन् पास बैठने वालों से भी वह अकर्पित होता है, क्यों कि भोजन मनुष्य की प्रिय वस्तु है और एक व्यक्ति जब दूसरे की थाली पर विशेष दिलचस्पी के साथ दृष्टि डालता है तो उस पर उसकी दृष्टि का असर पड़ता है। यदि कोई दुखी होकर किसी को भोजन दे तो उसे खाने वाला जरूर रोगी होजायगा ऐसा देखा जाता है। किसी के हाथ से छीन कर या समाज में बैठ कर दूसरों के दिये बिना जो खाता है वह भी उन खाद्य पदार्थों के साथ एक प्रकार की ऐसी विद्युत ले जाता है जो करीब करीब विप का काम करती है और उससे वमन तक हो सकती है। एकान्त स्थान में या चौके में बैठकर भोजन करना इस दृष्टि से बहुत ही अच्छा है कि उस पर भीड़ भाड़ की दृष्टि नहीं पड़ती। हाँ, एक ही घर के या एक ही प्रकार के विचारों वाले लोग पास पास बैठकर भोजन कर सकते हैं, क्यों कि उनमें एक दूसरे के प्रति पूर्ण सहानुभूति होती है और जातीय शील स्वभाव बहुत कुछ मिलते जुलते हैं, किन्तु दूसरे लोगों में ऐसा नहीं हो सकता। बनाने वाले या परोसने वाले के शारीरिक और मानसिक गुण, हाथों का प्रभाव, अनिवार्यतः भोजन पर पड़ता है। माता, बहिन या पत्नी के हाथ का परोसा हुआ रूखा सूखा भोजन बजार के हलुवे से अधिक गुणकारक होता है। क्यों कि उनकी प्रेम भावनाऐं भी उनमें लिपट आती हैं, शबरी के बेरों की श्रीरामचन्द्र जी ने और विदुर के शाक की भगवान कृष्ण ने बड़ी प्रशंसा की है। यह प्रशंसा उनका मन बढ़ाने के

लिए ही न थीं, वरन् सत्य भी थीं। प्रेम की सद्भावनाओं में इतने रुचिर तत्व होते हैं कि उनसे साधारण भोजन भी बहुत उच्च कोटि का बन जाता है। होटलों में खाने व्यक्ति हमेशा पेट की शिकायत करते हैं। कहते रहते है-होटलों में रोटी कच्ची मिलती है, शाक खराब मिलता है, इसलिए वह हमें हजम नहीं होती। किन्तु वास्तविक कारण दूसरा ही है। होटल वालों की नीयत यह रहती है कि ग्राहक कम भोजन खावें जिससे हमें अधिक लाभ हो यह भावनाऐं भोजन के साथ पेट में पहुँचती हैं और ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करती हैं कि खाने वाले की भूख घट जावे। बाजारों में बिकने वाली मिठाइयां या अन्य दूसरी खाद्य वस्तुऐं प्रदर्शनार्थ रक्खी जाती हैं। रास्ता निकलने वाले अधिकांश लोगों का मन उन्हें देख कर ललचाता है, परन्तु वे कारण वश उन्हें खरीद नहीं सकते। कई बार छोटे बच्चे और गरीब लोग उनकी ओर बड़ी ललचाई हुई दृष्टि से देखते हैं परन्तु अपनी बेबशी के कारण मन मारकर दुखी होते हुए देखते हुए चले जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों की यह बेबशी भरी इच्छाऐं उस मिठाई आदि में प्रचुर मात्रा में लिपट जाती हैं। अनेक मनुष्यों की ऐसी भावनाओं को वह बाजारू भोजन अपने में इकट्ठा करता रहता है और कुछ समय उपरान्त उनका एक बोझ जमा होजाता है और उसे पूर्णतः अखाद्य बना देता है। 'बाजारू भोजन से बीमार पड़ते हैं' यह अनुभव बिलकुल सत्य है। इसका कारण और कुछ नहीं हो सकता। घृत, मिष्ठान्न जैसी बलवर्द्धक वस्तुओं से बने हुए पदार्थ भी हानि पहुँचावें तो इसका भला और क्या कारण होगा?

एक साथ, एक थाली में, या खाने से शेष बचा हुआ झूठा भोजन करना तो बहुत ही घृणित है, लार का कुछ अंश जिसमें सम्मिलित होजाय ऐसा भोजन देखते ही मन को घृणा

उत्पन्न होती है। कहते हैं कि इससे प्रेम उत्पन्न होता है, इस कथन में कुछ सचाई तो है, पर वह लाभ हानि की तुलना में न कुछ के बराबर है। एक व्यक्ति का शारीरिक अंश (थूक लार) आदि दूसरे के शरीर में पहुंच जाता है, तो उसे अपनी जाति के शरीर को अपनी ओर आकर्षित करता है। परन्तु जब तक गुण स्वभाव आदि भी एक से न हों तब तक वह प्रेम स्थायी नहीं हो सकता। जैसे पिचकारी से शरीर पहुँचाये हुए दूसरे व्यक्ति के खून की ताकत एक नियत समय में जाकर समाप्त हो जाती है, उसी तरह एक थाली में भोजन करने से जो थूक आदि दूसरे के शरीर में पहुँचता है, बहुत थोड़े समय में ही समाप्त हो जाता है। यह प्रेम बहुत ही हलका उत्पन्न होता है। साथ ही दूसरे के भले बुरे विचार भी प्रवेश कर जाते हैं। बुरे विचार अधिक तीव्र होते हैं, इसलिये सबसे प्रथम उन्हीं का असर होता है। कई बार इससे छूत वाले संक्रामक रोगों का एक दूसरे पर आक्रमण होने का अंदेशा रहता है। इसलिये हर व्यक्ति को सदैव अलग अलग पात्रों में भोजन करना चाहिये।

यदि अन्य व्यक्तियों के यहाँ या अपने से भिन्न प्रकृति के लोगों के यहाँ भोजन करने का अवसर आवे तो अच्छा है कि उनके यहाँ प्रयोग होने वाले धातुओं के वर्तन प्रयोग में न लाये जावें। धातुऐं अपने प्रयोगकर्ता के दोषों को बहुत ही शीघ्रता से प्रचुर मात्रा में अपने अन्दर धारण कर लेती हैं और जब तक अग्नि में न तपाया जाय तब तक शुद्ध नहीं होती। कई बार अपने से बहुत ही भिन्न स्वभाव के मनुष्यों के द्वारा बहुत काल तक प्रयोग किये हुये पात्र उनकी भावनाओं को इतना अधिक ग्रहण कर लेते हैं कि बार २ तपाने पर भी अपना असर नहीं छोड़ते। इसलिये दूसरे ऐसे लोगों के यहाँ, जहाँ अपने विचारों का सामंजस्य नहीं होता

यदि थाली गिलास लेने की अपेक्षा पत्तों की पत्तल एवं मिट्टी के गिलास, कुल्लड़, मटकन्ने, काम में लाये जावें तो बहुत ही अच्छा है, क्यों कि यह एक बार ही प्रयोग होते हैं।

मुँह और हाथ धोकर भोजन करना चाहिए, जिससे उनमें आये हुए दुर्भाव छूट जाँय। चूल्हे के पास चौके में भोजन करने से वहां का उष्ण वातावरण बुरे प्रभावों को बहुत कुछ दूर कर सकता है। कपड़ों की अशुद्धि भोजन तक उड़ कर न पहुंचे, इसलिए जितने कम होसके उतने कम कपड़े खाते समय पहनने चाहिए। बैठने का स्थान पवित्र हो। परोसने वाले जहाँ तक होसकें भोजन को कम से कम हाथ से छूँए, जल आदि प्रवाही पदार्थों को बार बार छूना, उनमें हाथ या उङ्गली डालना तो बहुत ही बुरा है, क्योंकि सूखे पदार्थों की अपेक्षा प्रवाही पदार्थ बहुत जल्द विद्युत प्रवाह को अपने अन्दर धारण कर लेते हैं। स्वयं अपने हाथ से तैयार किए हुए खाद्य पदार्थ सर्वोत्तम हैं इसके बाद अपने प्रिय परिजनों या समान विचार वालों के हाथ का बना हुआ। भिन्न स्वभाव के मनुष्यों के यहां भोजन का अवसर आवे तो सूखा भोजन लेना चाहिए, क्योंकि उनमें बाहरी प्रभावों का समावेश देर में और कम होता है। दूध या उससे बने हुए प्रवाही पदार्थ प्रतिकूल विचार वालों से कदापि न लेने चाहिए क्योंकि दूध, जल से भी अधिक सजीव होने के कारण अत्यधिक प्रभाव को ग्रहण कर लेता है।

वस्तुओं पर गुप्त रूप से बहुत दूर तक के संस्कारों का प्रभाव बना रहता है। छूत छात के प्रभाव अग्नि पर पकने से नष्ट हो सकते हैं, किन्तु बलात् अपहरण किया हुआ या भिक्षा द्वारा प्राप्त हुआ जो अन्न होगा वह अपने उन संबन्धियों की भावनाओं को अग्नि पर पक जाने के उपरान्त भी न छोड़ेगा। पशु को

बध करके निकाले गये चमड़े को चाहे कितना ही पकाया जाय, जाहे उस पर कितना ही रंग रोगन किया जाय, वह उस प्रभाव का कदापि परित्याग न करेगा, जो मरते समय पशु को भयंकर यंत्रणा के कारण उस पर पड़ा था। हत्या करके किसी पशु के शरीर से निकाला गया मांस या चमड़ा उसके उपयोग करने वाले को यंत्रणा दिये विना छोड़ नहीं सकता। इसलिए जो कुछ हम खावें उसमें यह भी देखलें कि यह पदार्थ कहीं वेदनामय भावों से भरा हुआ तो नहीं है। फूँका प्रथा से या पीट पीट कर निकाला गया पशु-दुग्ध पीकर भला कौन लाभ की आशा कर सकता है?

बहुत से विद्वान् और साधुजन भोजन के समय छूत छात का विशेप ध्यान रखते हैं। मेडम बमेव्हटस्की की सम्मति है कि अपना भोजन और जल पात्र अधिक लोगों की छूत में मत आने दो। भोजन बनाने वाले या परोसने वाले को पहले भोजन करा-देना चाहिए, ताकि वह कुड़कुड़ाते हुए पेट की इच्छाओं को उस पर न डाले। उससे यह भी कह दो कि जहाँ तक होसके हाथ से कम छुए और जहाँ जरूरत हो वहां चिमटा या चम्मच का प्रयोग करले। यहां बाहरी सफाई का खण्डन नहीं किया जा रहा है, जरूरी वह भी है, परन्तु भोजन की आन्तारिक सफाई तो बहुत ही आवश्यक है।

भोजन के कई प्रकार के प्रभावों को हम अपनी इच्छा शक्ति द्वारा भी दूर कर सकते हैं। जब थाली सामने आवे तो थोड़ा सा जल लेकर उसके चारों तरफ फेर दो और एक मिनट तक आँखें बन्द करके इस सामिग्री को परमात्मा के समर्पण करते हुए मन ही मन प्रार्थना करो कि —"हे प्रभो! यह भोजन आपको समर्पित है। इसे पवित्र और अमृतमय बना

दीजिए।' जब नेत्र खोलो तो विश्वास करो कि तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई है और उसमें अब केवल लाभकारी तत्व ही रह गये हैं। सच्चे हृदय से प्रभु की प्रार्थना करके और उसमें पवित्रता एवं अमृतत्व की भावना के उपरान्त जो भोजन किया जाता है, वह बहुत से हानिकारक प्रभावों से मुक्त हो सकता है और स्वास्थ्य की उन्नति में सहायक हो सकता है।

जड़ वस्तुओं पर प्रभाव

मनुष्य की नस नस में व्याप्त यह विद्युत शक्ति केवल शरीर धारी चैतन्य प्राणियों पर ही असर नहीं डालती, वरन् निर्जीव और जड़ कहे जाने वाले पदार्थों पर भी असर करती है। इटावा जिले के कलक्टर डाक्टर एस० एस० नेहरू ने 'इलेक्ट्रिक कलचर' पद्धति से एक विशाल पैमाने पर परीक्षण करके सिद्ध किया है कि चुम्बक की विद्युत धारा का वृक्षों और पौदों पर बड़ा ही आश्चर्यजनक प्रभाव होता है। उन्हों ने लोहे की जाली द्वारा वृक्षों के और पानी के साथ खेती की फसल को बिजली की सहायता पहुँचाई, तो पाया कि वे, पौदे, दूसरे अन्य पौदों की अपेक्षा बहुत अधिक उन्नति कर गये और उनका विस्तार एवं फलने फूलने का परिणाम बहुत ही संतोष जनक रहा। उपरोक्त डाक्टर साहब ने केवल यहीं तक अपना काम सीमित नहीं रखा, वरन् पर्याप्त प्रमाणों सहित यह भी साबित किया कि चुम्बक शक्ति का पानी पिलाकर या अन्य प्रकार से बिजली की सहायता पहुँचा कर कठिन से कठिन रोगों को अच्छा किया जा सकता है। उन्होंने बच्चों के गले में ताँवे के तार अथवा तावीज विद्युतान्वित करके पहिनाये, फल स्वरूप दाँत निकलने के कष्ट तथा अन्य प्रकार की उनकी बीमारियाँ

अच्छी होगई। यह प्रयोग उन्होंने उस मामूली 'मेगनेट' यन्त्र की सहायता से किये थे, जो हलकी सी ताकत का होता है और मोटर आदि में लगा होता है। मनुष्य की शारीरिक चुम्बक शक्ति उस की अपेक्षा बहुत ही सूक्ष्म और गुणकारी प्रभाव रखती है। देखा गया है कि जिन वृक्षों के नीचे मनुष्यों या पशुओं का रहना होता है, वे बहुत बढ़ते और फलते फूलते हैं। बाग के फलदार पेड़ों में जैसे खाद, पानी आवश्यक है, उसी तरह मनुष्य शरीर की गर्मी भी आवश्यक है अन्यथा उनकी फसल बहुत कमजोर हो जाती है। जिन खेतों पर किसानों के झोंपड़े होते हैं और वे कभी कभी बैठते हैं, उसके आस पास खेती की हालत बहुत अच्छी होती है। देखा गया है कि कुछ वृक्ष जो मुरझाई हुई हालत में थे और सूखना ही चाहते थे, उनके नीचे जब मनुष्य और पशुओं का निवास हुआ तो वे कुछ ही दिनों में नवीन पल्लवों से लद गये। हर किसान जानता है कि जंगलों में सुनसान पड़े रहने वाले खेतों की अपेक्षा गाँव के निकटवर्ती खेतों में अच्छी पैदावार होती है, कारण यही है कि उन तक मनुष्य शरीर की बिजली अधिक मात्रा में पहुँचती है। चने के पौदों की कोंपल साग के लिये तोड़ ली जाती हैं, तो इससे उसकी फसल को नुकसान नहीं होता, क्योंकि हाथ के स्पर्श से उतना लाभ पहुँच जाता है जितनी हानि इन कोंपलों के काटने से नहीं होती। इसके विपरीत यदि किसी हँसिये से उसे काटा जाय तो अवश्य ही पौदे फिर उतने न बढ़ेंगे।

मकानों पर मनुष्य के रहने का प्रभाव हुए बिना नहीं रह सकता। एक मकान में कोई मनुष्य न रहे और वह खाली पड़ा रहे, तो बहुत जल्द उसकी दशा खराब हो जायगी और कम समय में रद्द हो जायगा, किन्तु दूसरा मकान जिसमें मनुष्य रहते हैं, इतनी जल्दी खराब नहीं हो सकता। मोटे तौर से देखने

में वह मकान जल्द खराब होना चाहिये, जिसमें लोग रहते हैं, क्योंकि प्रयोग करने से हर चीज जल्द टूटती है और जो चीज़ काम में नहीं आती, वह ज्यादा दिन चलती है, परन्तु यहाँ उलटा ही उदाहरण दृष्टिगोचर होता है, इसका कारण मानवीय विद्युत का चमत्कार है। मनुष्य की बिजली जड़ पदार्थों में भी बल का संचार करती है। मकानों में दीर्घ जीवन के साथ-साथ उसके मालिकों के विचारों का वातावरण भी गूंज जाता है। जिस घर में जैसी प्रकृति के लोग रहते हैं, उनके विचारों की शृङ्खला उस स्थान में गुञ्जित हो जाती है। वे लोग चले जाँय तो भी बहुत काल तक उनके गुण, स्वभाव वहाँ डेरा डाले रहते हैं। जिसे आध्यात्म तत्व की थोड़ी भी जानकारी है, वह किसी भी मकान में प्रवेश करते ही बता सकता है, कि यहाँ पर कैसे स्वभाव के लोगों का रहना होता है या हुआ था। भले विचारों से परिपूर्ण मकान में प्रवेश करते ही एक शान्ति, शीतलता का अनुभव होता है। जिन स्थानों में बुरे विचारों के लोग रहे हैं, वहाँ अपने मन में भी उस तरह की तरंगों का प्रादुर्भाव होने लगता है। जिस घर में दुराचारी लोग रहे है, तुम उस स्थान पर कुछ समय रह कर देखो तो तुम्हारे मन में जिस प्रकार के भाव कभी नहीं उठते थे, उस तरह के वहाँ उठेंगे। जिस स्थान पर कोई वीभत्स या भयंकर कार्य हुए हैं, उन जगहों का वातावरण मुद्दतों तक नहीं बदलता। जिन मकानों में अग्नि काण्ड, भ्रूण हत्या, कत्ल या ऐसे ही अन्य जघन्य कार्य हुए हैं, उन घरों की ईंटें रोती हैं और उन स्थानों पर सताये गये प्राणी की करुणा कभी कभी जागृत हो कर बड़े डरावने दृश्य या स्वप्न उपस्थित करती है। किन्हीं घरों का अभागा या भुतहा होना प्रसिद्ध होता है, उनमें जो कोई रहता है, उन्हें कष्ट होता है, डर लगता है या अन्य उपद्रव होते हैं। ऐसे स्थानों के

संबन्ध में उनका कुछ आगे का इतिहास ढूँढा जाय तो जरूर कोई खटकने वाली घटना उस घर में हुई होगी, कोई मनुष्य अत्यंत ही शारीरिक या मानसिक कष्टों से कराहता हुआ उसमें पड़ा रहा होगा, या उस स्थान पर किसी की 'हाय' पड़ी रही होगी। उग्र मानसिक अनुभूतियां जिन स्थानों में मँडराती रहती हैं, उनमें रहने वाले सुख से नहीं रह सकते। प्रबल मनस्वियों को छोड़कर साधारण कोटि के मनुष्यों का कलेजा उनमें काँपता रहता है।

बहुत दिनों तक खाली पड़े रहने वाले मकानों में उसमें किसी समय विशेष मनोयोग से रहे हुए व्यक्तियों के विद्युत कण जागृत हो उठते हैं। चूंकि मनुष्य शरीर के एक एक कण में एक स्वतंत्र सृष्टि रच डालने की शक्ति भरी हुई है, जब उसके लिये किसी प्रकार की बाधा उपस्थित नहीं होती तो वे अवसर पाकर अपने पूर्व रूप की भूमिका में एक स्वतन्त्र अव्यक्त व्यक्ति की रचना करने लगते हैं। एक कण का एक अव्यक्त स्वरूप बन सकता है। कोई मृत व्यक्ति—चाहे वह अन्यत्र जन्म ले चुका हो, फिर भी उसके पिछले कण यदि जागृत होने की स्थिति में आजावें, तो वे प्रकट हो सकते हैं। मृतात्माऐं, प्रेत, पिशाच, बेताल अक्सर किसी भूतपूर्व व्यक्ति के थोड़े से विद्युत परमाणुओं की एक स्वतंत्र सृष्टि होती है। बहुत सी बातें इनमें अपने पूर्व रूप से मिलती जुलती हैं और बहुत सी बिलकुल स्वतन्त्र होती हैं। इस प्रकार से बने हुए भूत प्रेतों के लिये यह आवश्यक नहीं कि उनके सारे स्वभाव और सारा ज्ञान पूर्व शरीर की ही भांति हो।

यह बताया जा चुका है कि बहुत दिनों से खाली पड़े हुऐ सुनसान मकानों में ऐसे विद्युत कण अक्सर मूर्तिमान होते हैं।

यह जरूरी नहीं है कि यह अव्यक्त प्रतिमाऐं उसी मनुष्य की हों जो उसमें रहा हो। इधर उधर वायु मण्डल में उड़ते उड़ाते कोई बीज कण वहां ठहर जावे और उपयुक्त अवसर पा जावे तो उस स्थिति तक विकाश कर सकता है, जिसे लोग कभी कभी भूत प्रेत के रूप में देखने या मानने लगते हैं। यह प्रतिमाऐं कई बार अपने पूर्व स्मरण की भूमिका की जाग पड़ती हैं, तो वैसी ही क्रिया को दुहराने लगती हैं, जैसे उसे पूर्व काल में गाने का शौक रहा हो तो इस समय भी गाने लगे। खाली पड़े हुए मकानमें थोड़े से व्यक्ति यदि आकर रहें तो उनके शरीर की भाप उन प्रतिमाओं को गर्मी देती है, फल स्वरूप वे अधिक सक्रिय हो जाती हैं और अपने कार्यों को अधिक वेग से दुहराने लगती है किन्तु यदि अधिक मनुष्य वहां जाकर रहें तो उनकी बढ़ी हुई गर्मी उन प्रतिमाओं को खदेड़ बाहर करती हैं। जब ऐसी घटनाऐं उपस्थित हों कि अमुक स्थान में भूत दीखा या उसकी अमुक हरकत हुई तो समझना चाहिए कि किसी जीवित या मृत व्यक्ति का कोई विद्युत कण चैतन्य प्रतिमा के रूप तक विकास कर चुका है। यह प्रतिमाऐं यदि बहुत ही कठोर न हों तो आसानी से हटाई जा सकती हैं। घर की पूरी सफाई, अग्नि की गर्मी, अधिक लोगों का निवास उन्हें हटने को मजबूर कर सकता है।

सर्वत्र स्त्रियां जेवर पहनना पसन्द करती हैं और उससे सौन्दर्य में वृद्धि भी होती है। विज्ञान बतलाता है कि वायु के साथ आकाशीय विद्युत की एक धारा भी बहती रहती है। इसमें मनुष्य शरीर को पोषण करने का बड़ा गुण है। धातुओं में बिजली को खींचने का गुण है। स्थूल और सूक्ष्म का भेद इस आकाशीय विद्युत में भी है। लोहे, पीतल या ऐसी ही सस्ती धातुओं का सस्तापन उनके रंग रूप के कारण नहीं, वरन् सूक्ष्म और उपयोगी विद्युत प्रवाह को ग्रहण करने की दृष्टि है।

अन्यथा यदि यह बात न होती तो चांदी की अपेक्षा लोहा मँहगा होता, क्योंकि उसकी भौतिक उपयोगिता चांदी से अधिक है, इसी प्रकार सोने से निकिल धातु महँगी होती, क्योंकि उसकी चमक सोने से भी अच्छी होती है। चाँदी और सोना आकाश की सूक्ष्म बिजलियों को आकर्षित करते हैं। चांदी द्वारा शीतलता, गंभीरता और मन्दता उत्पन्न होती है। स्त्रियों की बढ़ी हुई, काम-शक्ति को घटाने के लिए चाँदी के जेवर पहनाने चाहिए। पैरों में चांदी के भारी कड़े पहन कर विधवाऐं अपने सतीत्व की रक्षा आसानी से कर सकती हैं। जिनके पति परदेश में हों, ऐसी स्त्रियों को भी चांदी के कुछ जेवर जरूर पहनने चाहिए, जिससे उनका मन शान्त रहे। सोना; उत्साह तेज और चमक प्रदान करता है। चहरे पर तेज या चमक होना स्त्रियां विशेष रूप से पसन्द करती हैं, इस दृष्टि से नाक और कान में कुछ सोने के जेवर पहनना अच्छा है। कान के निचले भागों में ही सोना पहनना चाहिये, जिससे कनपटी और गालों से सम्बन्ध रखने वाली मांस पेशियों से छूना रहे। कान के ऊपरी भाग में सोना पहनने से उसका सम्पर्क मस्तिष्क की ऊपर पेशियों से होता है, जिससे चित्त में चंचलता उत्पन्न होती है। धातुऐं अपने आकर्षण से आकाश की उपयोगी बिजली के खींच कर पहने हुए शरीर में देती है। इससे न केवल सौन्दर्य की वरन् स्वास्थ्य की भी वृद्धि होती है। ताँबा भी सोने ही जैसा गुणकारी है, परन्तु न जाने उसके जेवर क्यों नहीं पहने जाते। शायद सस्तेपन के कारण ही उसकी उपेक्षा की गई है। सोने के पोले जेवर जिनके अन्दर लाख आदि भर-वाई जाती है, यदि ताँबा भरवादिया जाय तो गुणों में वह सोने के समान ही रहेगा। सोने में थोड़ा तांबा मिलाकर 'गिन्नी गोल्ड' जैसी मिश्रित धातु के जेवर और भी उत्तम होंगे। छाती, हृदय, कंठ के आस पास कोई जेवर पहनना हृदय को बल देता है।

पुरुष, जो खुद जेवर पहना ठीक नहीं समझते यदि सोने या तांबे की एक अँगूठी पहने रहें तो अच्छा है। तांबे और चाँदी के तारों से गुथी हुई अँगूठी सात्विक विचारों को आकर्षित करती है। उचित मात्रा में अष्टधातुओं के मिश्रण से बने हुए जेवर एक प्रकार से जीवित मैगनेट हैं। अष्टधातुओं के जेवरों में बहुत ही ऊँची आकर्षण धारा होती है। परन्तु स्मरण रहे अष्ट धातु का कोई बहुत बड़ा जेवर न पहना जाय अन्यथा निद्रा नाश, रक्त पित्त, उन्माद जैसे रोग हो सकते हैं। उनका लाभ अँगूठी जैसे छोटे जेवर पहनने में ही है।

रुपये पैसे अनेक हाथों में चलते रहते हैं, हर आदमी उन्हें प्यार करता है और साथ ही अपनी लालसाऐं उन पर लपेट देता है। कई बार तो वह ऐसे दुखी लोगों के हाथ में होकर निकलते हैं, जो उसे छोड़ना नहीं चाहते, पर मजबूरन छोड़ना पड़ा। उनकी बेवशी पैसों पर चिपक जाती है। निर्दयता पूर्वक यदि अपहरण किया गया हो, तो वह धन अपने पूर्व रक्षक की करुणा से परिस्रावित हो जाता है। ऐसी विचित्र और विभिन्न प्रकार की अन्तर्भावनाओं की एक मोटी ताजी गठरी हर एक सिक्के की पीठ पर जमा रहती है। कहते हैं कि एक रुपये में एक सेर गर्मी होती है। यह बात विनोद या उपहास की दृष्टि से ही नहीं कही गई है, इसमें कुछ सचाई भी है। उन अनेक प्रकार के विचारों का जमघट हर क्षण कुछ न कुछ काम करता रहता है। जब जेब भरी होगी तो बीस शैतानियाँ सूझेंगी, किन्तु खाली हाथ होने पर मन की दूसरी ही दशा हो जाती है। यदि तुम कोई गंभीर मनन कार्य करना चाहते हो, किसी समस्या पर विचार करना चाहते हो, या भजन पूजन करना चाहते हो तो आवश्यक है, कि अपने शरीर के आस पास

रुपया पैसा न रखो, अन्यथा मन उछलता रहेगा और एक स्थान पर स्थिर न रहेगा और बुद्धि द्वारा किसी गहन समस्या पर ठीक निर्णय न कर सकोगे। जरूरत भर पैसे जेब में रख कर शेष पैसा अन्यत्र रख देना चाहिए, रात को सोते समय शरीर पर पहने हुए किसी वस्त्र की जेब में रुपया पैसा मत रखो और न चारपाई पर ही उन्हें रखकर सोओ, अन्यथा अच्छी नींद न आवेगी और बुरे स्वप्न दिखाई देंगे। रत्नों में तो यह ग्राहक शक्ति और भी अधिक होती है। जो वस्तु जितनी मूल्यमान होगी, उस पर उतना ही मनुष्य का लालच होगा। इसलिये पैसों की अपेक्षा रुपया और रुपया की अपेक्षा रत्न अधिक बोझ लादे होते हैं। रत्न धनवानों के पास रहते हैं, और देखा जाता है कि धनवानों का निकटवर्ती वातावरण अधिक पापमय रहता है। इस वातावरण से वे रत्न भर जाते हैं। कभी किसी अधिक पापी या क्रूर कर्मा के पास कोई रत्न रहे या किसी कृपण से बलात् छीना गया हो तो वह उन्हीं भावनाओं से भर जाता है और फिर जिन जिनके पास जाता है, उन पर अपने मालिक की भावनाओं के अनुसार भला बुरा असर करता है। इसलिये रत्नों का शुभ अशुभ होना प्रसिद्ध है। कोई रत्न शुभ होते हैं, उनके पास रखने से सुख सम्पत्ति बढ़ती है, और कोई बहुत ही अशुभ होते हैं। इसलिए लोग रत्नों की परीक्षा करके ही उन्हें अपने यहाँ रखते हैं। शुभ अशुभ तो रुपया पैसा भी होते हैं, पर वे अधिक देर ठहरते नहीं, जल्दी जल्दी एक हाथ से दूसरे हाथ में चलते रहते हैं, इसलिये न तो उनका परीक्षण ही हो पाता है और न असर ही मालूम पड़ता है। दूसरे इन सिक्कों के मूल्य के अनुसार उनमें प्रभाव भी कम होता है। जो जितना कीमती सिक्का या रत्न होगा और

जितने अधिक समय तक एक स्थान पर रहेगा, उसका उतना ही अधिक प्रभाव भी होगा। इस शुभ अशुभ का कारण उनके पूर्व रक्षकों के विचार ही हैं।

पुराने लोग जेवर गिरवी रखने का व्यवसाय बुरा बताते हैं। ऐसे असंख्य उदाहरण पाये जाते हैं, कि जेवर गिरवी रखने का व्यवसाय करने वाले फलते फूलते नहीं और सदा किसी न किसी कष्ट से दुखी रहते हैं। कारण यह है अधिकांश जेवर स्त्रियों के पहनने के होते हैं, और वे उन्हें अत्यधिक प्यार करती हैं। जब वह गिरवी के लिये मांगे जात हैं, तो वे बहुत दुखी होकर देती हैं, और भविष्य में भी जब तक वे उन्हें वापिस न मिलें दुखी बनी रहती हैं। यह दुख भरी इच्छाएें अपनी इष्ट वस्तु के पास पहुंचती हैं, और उस पर लगातार लदती रहती हैं। धातुओं में विद्युत शक्ति को अधिक मात्रा में ग्रहण करने का गुण होने के कारण वे इन इच्छाओं को पूरी तरह अपनाये रहती हैं। इस प्रकार वे दुख भरे विचार जिस व्यक्ति की आधीनता में रहेंगे वे उसे अपने प्रभाव से प्रभावित किये बिना कदापि न छोड़ेंगे। इसी कारण जेवर या थाली वर्तन आदि घर गृहस्थी से काम आने वाली चीजें जो लोग गिरवी रखते हैं, देखा गया है, कि वे दुखी रहते हैं। और किसी न किसी प्रकार की आपत्ति में फँसे रहते हैं।

खोटे सिक्के जिस आदमी के पास पहुंचते हैं उसे ही झुंझलाहट आती है, उन्हें चलने के लिये वह कपट पूर्ण युक्ति सोचता है, देने वाले के प्रति क्रोध करता है, अपनी बेवकूफी पर पछताता है, आर्थिक क्षति के कारण दुखी होता है, यह सब भावनाएें उन खोटे सिक्कों पर जमा होती हैं। चूंकि वे जल्दी नहीं चलते, बड़े प्रयत्न के बाद किसी को दिये जाते हैं। साधारणतः

कई दिन एक आदमी के पास रहते हैं और वह उसकी बनावट को बार बार विशेष दृष्टिपात के साथ देखता है, इसलिये वह दुख की भावनाऐं और भी अधिक जमती हैं। इस प्रकार यह खोटे सिक्के बहुत ही अशुभ और दुखदायी हो जाते हैं। सहृदय व्यक्तियों को उचित है कि उनके पास कोई खराब सिक्का आजावे तो स्वयं हानि उठाकर उसे नष्ट करदें, आगे न चलने दें, क्यों कि वह जितना ही अधिक जियेगा, उतना ही जन समाज को हानि पहुंचावेगा।

कपड़े शरीर के सबसे अधिक निकट संपर्क में रहते हैं, इसलिये जड़ होते हुए भी वे पूरी तरह प्रभावित हो जाते हैं। किसी का पहिना हुआ कपड़ा पहनना ऐसा ही है, जैसा उसका झूठा भोजन खाना। एक पौराणिक कथा है, कि देव गुरु बृहस्पति की कन्या देवयानी ने एक दूसरी लड़की शर्मिष्ठा के कपड़े पहन लिये थे, इस लिऐ उसे जीवन भर उसका गुलाम बनकर रहना पड़ा था। पुरानी चीजें बेचने वालों की दुकान से उतरे हुए बढ़िया कपड़े सस्ते दामों में खरीद कर लोग पहनते हैं, और अपनी बुद्धिमानी पर प्रसन्न होते हैं। उन्हें जानना चाहिये कि यह कार्य उनकी शरीरिक और मानसिक तन्दुरुस्ती के लिए बहुत ही बुरा है। जिस आदमी के व्यक्तित्व के संबंध में आप नहीं जानते, उसके विचार और स्वभावों से लदे हुए कपड़े को क्यों पहिनते हैं? आपके मन के ऊपर यदि किसी के बुरे स्वभाव की छाप पड़ी तो यह उससे भी बुरा होगा कि शरीर से बीमार पड़ जाते। क्यों कि शरीर की बीमारी तो थोड़े दिनों में ठीक हो जाती है, किन्तु मन के ऊपर पड़े हुए अनिष्टकर प्रभाव जन्म भर दुख देते हैं और आगामी जन्मों के लिये विरासत में मिलते चले जाते हैं। चाहे फटे कपड़े पहनिये, कम कपड़े पहनिये, परन्तु दूसरों के झूठे कपड़े

मत पहनिये। यह तर्क भी ठीक नहीं कि अच्छे स्वभावके लोगोंके कपड़े तो पहन लें। हो सकता है कि तुम्हें इससे कुछ लाभ पहुँचे, परन्तु इसकी ही क्या गारंटी है, कि जिसे तुम अच्छा समझते हो उसमें मन में बुरे भाव नहीं हैं या उसे कोई गुप्त रोग नहीं है ? फिर मनुष्य का स्वाभिमान कहता है, कि कोई कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो, क्यों उसका झूठा खाया जाय क्यों उसका झूठा पहना जाय।

रेशमी और ऊनी वस्त्र बहुत कम प्रभाव ग्रहण करते हैं, इसीलिए उन्हें पूजा आदि पवित्र कार्यों में प्रयोग किया जा सकता है। कहीं अशुद्ध स्थानों में जाना हो और कपड़े बदलने की सुविधा न हो, तो रेशमी या ऊनी कपड़े पहन सकते हैं। जैसा कि लोग अक्सर मृतक दाह के बाद रेशमी कपड़ा पहनते हैं। कपड़ों को धूप में खूब तपाने से और गर्म पानी में उबालने से उनका मैल और मोटे दोष दूर होजाते हैं। जिन लोगों को हम नित्य छूते हैं, उनके प्रभावों को भी कपड़े थोड़ा बहुत ग्रहण कर लेते हैं, इसलिए अपने वस्त्रों को नित्य धोकर स्वच्छ कीजिए और धूप में तपाकर तब पहनिये।

विचारों की बिजली।

हमारी मानसिक विद्युत में से प्रति क्षण जो लहरें उठती रहती हैं, उन्हें विचार नाम से पुकारते हैं। विचार केवल एक शब्द नहीं है, वरन् एक मूर्तिमान पदार्थ है जिसे वैज्ञानिक यन्त्रों की सहायता से प्रत्यक्ष देखा जाने लगा है। अमेरिका में ऐसे फोटो खींचने के कैमरे बना लिये गये हैं, जो विचारों की तस्वीरें साफ साफ खींच लेते हैं। तुम जिस वस्तु का चिन्तन कर रहे हो, उसी वस्तु के समान मानस चित्र बनने लगते हैं। उन

यंत्रों की सहायता से स्थूल वस्तुओं की भाँति उन मानस चित्रों का भी फोटो खिंच जाता है। विचार हर घड़ी मस्तिष्क में से निकल कर बाहर की ओर उड़ते रहते हैं, उन उड़ते हुए विचारों की तस्वीर ठीक वैसी ही आती है, जैसी कि मनुष्य की कल्पना हो।

तुमने पानी में लहरें उठती हुई देखी होंगी, यह चाहे किसी जगह से उठी हों पर समाप्त वहीं जाकर होंगी जहाँ पानी का अन्त होता होगा, पानी का अन्त चाहे कितनी ही दूर हो और लहर चाहे कितनी ही छोटी हो वह, बराबर बहती रहेगी और जब किनारे पर पहुँच जायगी तो पृथ्वी की आकर्षण शक्ति उसके वेग को अपने अन्दर खींच लेगी। विचार भी मानसिक विद्युत की लहरें हैं और यह विश्व ब्रह्माण्ड में व्याप्त आकाश (ईथर) तत्व में उठती हैं। आकाश अनन्त है, उसका कहीं अन्त न होने के कारण उन लहरों का भी कहीं अन्त नहीं होता और वे निरन्तर बहती ही रहती हैं। विचार विभिन्न प्रकार के होते हैं, उस भिन्नता के कारण उनके रंग रूप में भी फर्क पड़ जाता है, इसलिए वे सब आपस में मिल जुल कर एक नहीं हो जाते वरन् अलग अलग बने रहते हैं। हाँ, एक समान विचार दूर दूर से इकट्ठे होकर घने होते रहते हैं, जैसे अलग अलग स्थानों से उड़ी हुई भाप एक जगह जमा होते होते बादल बन जाती है। बिजली में आकर्षण शक्ति भी होती है, इसलिए यह विचार एक दूसरे को खींचते रहते हैं। तुम जैसे विचार करते हो, मस्तिष्क में उसी जाति की आकर्षण शक्ति पैदा होती है और वह उसी प्रकार आकाश में उड़ने वाले विचारों को पकड़ कर अपने अन्दर खींच लेती है। इसलिए जो बात तुम सोचते हो उसके संबन्ध में बहुत सी नई बातें मालूम कर लेते हो, इसका

कारण है यह कि उस प्रकार का विचार कभी किन्हीं व्यक्तियों ने किया होगा और उनका अनुभव जो उड़ता फिर रहा था, तुम्हें मिल गया । परोपकार औ भलाई के विचार करने से वैसे ही विचारों का जमाव होता है और हृदय बड़ी शान्ति तथा शीतलता का अनुभव करता है, इसके विपरीत क्रोध, घृणा, पाप, कपट, के विचार करने पर वे भी अपनी जाति वालों को बुला लेते हैं और वे अपने दाहक गुणों के कारण मन को बेचैन बना देते हैं । कई महापुरुष प्रत्यक्षतः संसार की भलाई का कोई अधिक काम नहीं करते, परन्तु वे उच्चकोटि की पवित्र विचार धारा संसार में प्रवाहित करते रहते हैं, तदनुसार जनता को इतना लाभ पहुंचता है, जितना हजार आदमियों के शारीरिक कार्यों से नहीं हो सकता । अनेक महात्मा पर्वतों की कंदराओं में तप करते रहते हैं, यह न समझना चाहिये कि वे अपनी मुक्त या स्वर्ग कामना के लिये परिश्रम कर रहे हैं । असल में तप द्वारा वे अपनी आत्म विद्युत को बहुत तीव्र करते रहते हैं । और उसके द्वारा अपने पवित्र विचारों को ब्रोडकास्ट करते रहते हैं, जिन्हें सांसारिक मनुष्य अपने मानस रेडियो यंत्रों पर भले प्रकार सुन सकें । महात्मा गांधी सत्याग्रह के लिए ज्यादा तादाद में स्वयं सेवक नहीं चाहते, वे कहते हैं, कि यदि पर्याप्त आत्मिक शक्ति वाले थोड़े से आदमी हों तो भी सफलता मिल सकती है । जो आदमी चाहे जैसे उलटे सीधे विचार करते रहते हैं, उन्हें जानना चाहिये कि बुरे विचार अपनी जाति वालों को बुलाकर तुम्हारे ऊपर लाद देंगे और जीवन को बड़ा दुखमय बनादेंगे । पाप पूर्ण इच्छा करने से उनका असर दूसरों के लिये उत्पन्न होता है । इसलिए संसार में बुराई बढ़ती है, अत एव सदा सावधान रहना चाहिए कि पापमय विचार मन में

न घुसने पावे। जब उनका उदय हो उसी क्षण ढकेल कर बाहर निकाल देना चाहिये। अपनी और संसार की सर्वोत्तम सेवा इसी में है, कि तुम सदा पवित्र विचार करो। प्रेम, दया, परोपकार, सहानुभूति के विचार, अपनी सच्ची उन्नति और दूसरों की सच्ची सेवा करने का निश्चित मार्ग है।

साधारण रीति के किये जाने वाले विचार हलके होते हैं, और उनका असर भी हलका होता है, किन्तु जब यह गहरे अन्तराल तक पहुंच कर विश्वास का रूप धारण कर लेते हैं, तो इनका बड़ा अद्भुत असर दिखाई पड़ता है। कहा गया है; कि "विश्वासो फलदायकः" दृढ़ विश्वास इतना प्रबल होता है, कि इसके द्वारा उपस्थित होने वाले फल भी आश्चर्यजनक होते हैं। एक चिकित्सक, चिकित्सा शास्त्र में बड़ा कुशल है, रोग विज्ञान का वह बड़ा भारी पंडित है, औषधियां एक से एक बढ़िया रखता है, किन्तु रोगी को उसके इलाज से कुछ भी फायदा नहीं पहुँचता, किन्तु दूसरा वैद्य जो बीमारी के बारे में बहुत ही कम जानता है, और यहां मामूली सा चूरन चटनी देदेता है, तो बीमार को फौरन ही फायदा होता है। उसका कारण विश्वास है। रोगी को उस विद्वान् चिकित्सक पर विश्वास न था, किन्तु उस अनाड़ी वैद्य पर उसे भरोसा था, इसलिये वे कीमती दवाएं बेकार होगईं, और घास फूंस संजीवन साबित हुआ। डाक्टर लोग अब इस बातको स्वीकार करते हैं कि विश्वास से बढ़ कर और कोई दवा नहीं है। सच्ची बात तो है, कि इलाज तो एक बहाना है। उसका असर १० प्रतिशत और विश्वास का असर ६० प्रतिशत होता है। लोग अपने विश्वास के आधार पर अच्छे होते हैं, किन्तु समझते यह हैं कि हमें दवा ने अच्छा कर दिया।

हम देखते हैं, नदी, पर्वत, मूर्ति, मठ, मन्दिर, देवी, देवता, आदि को पूजने वालों को ये ही वस्तुऐं उनकी इच्छित कामना पूरी करती हैं, और मन चाहा फल देती हैं। वैसे इन जड़ वस्तुओं में अपनी निज की कुछ भी शक्ति नहीं है। कोई, कुत्ता उन पर मूत दे, तो भी अपनी रक्षा नहीं कर सकती, फिर भक्तों को इष्ट फल कैसे देती हैं? एक तत्वदर्शी ने इस सम्बन्ध में गहरा अनुसंधान करके बताया है, कि गहरे विश्वास के साथ की हुई आराधना जिस पर समर्पित की जाती है, उससे टकराकर वापिस लौट आती है। रबड़ की गेंद को जितने जोर से खींच कर दीवार पर मारा जायगा, वह उतने ही अधिक वेग के साथ लौट कर तुम्हारे पास आ जायगी। श्रद्धा और भक्ति की भावना में आत्म शक्ति का बाहुल्य रहता है, और वह इष्ट देव से टकरा कर जब वापिस लौटती है, तो उसमें पूरा बल होता है। देवता में जितना कम विश्वास होगा, उतना ही कम वह फल देगा। असल में मूर्ति आदि जड़ वस्तुओं में अपना निजी बल कुछ नहीं है, उनमें पूजा के योग्य बस एक ही गुण है, कि जिससे जो कुछ लेते हैं, उसमें बिना रत्ती भर घटाये बढ़ाये उसे ज्यों की त्यों लौटा देते हैं। महाभारत में एक कथा है, कि एकलव्य नामक भील ने गुरु द्रोणाचार्य से शस्त्र विद्या सीखनी चाही, जब उनने सिखाने से मना कर दिया, तो एकलव्य ने जंगल में जाकर उस द्रोणाचार्य की मूर्ति स्थापित की और उसी को गुरु मानकर धनुर्विद्या सीखने लगा। फल स्वरूप वह इतना कुशल हो गया, जितना कि प्रत्यक्ष द्रोणाचार्य के शिष्यों में से एक भी न था। इस प्रसंग में यह न सोचना चाहिये, कि द्रोणाचार्य की मूर्ति में कुछ चमत्कार था, विद्या देने वाली वस्तु तो उसकी आत्मिक भावना

थी जो उस मूर्ति से टकरा कर लौटी थी, और संतोषजनक परिणाम उपस्थित किया था।

धर्म शास्त्र और योग शास्त्र दोनों ने एक स्वर होकर गुरु की बड़ी महिमा गाई है। कितने ही बड़े बड़े ग्रन्थ गुरु की महिमा में लिखे गये हैं, यहाँ तक कि गोविन्द से भी गुरु को बड़ा बताया गया है। इस विवेचन का रहस्य यह है, कि उस पर जितनी श्रद्धा होगी वह लौट कर उतनी ही मात्रा में तुम्हारी उन्नति करेगी। गुरु कहलाने वाला भी आखिर मनुष्य ही है और जब तक वह शरीर धारण किये हुए है, तब तक शरीरधारी से होनी वाली त्रुटियाँ उससे भी होती रहती हैं। फिर साधारण या थोड़े बहुत उन्नत मनुष्य को उतनी बड़ी महिमा जो प्रदान की गई है, उसका वास्तविक रहस्य यही है, जो ऊपर कहा गया है। महर्षि दत्तात्रय ने २४ गुरु बनाये थे, जिन में कई तो अज्ञ मनुष्य और पशु पक्षी तक थे, वे दत्तात्रय की अपेक्षा बहुत ही कम ज्ञान रखते होंगे और यहाँ एक कि यह भी न जानते होंगे कि गुरु किसे कहते हैं, या हम किसके गुरु हैं ? फिर भी उन अज्ञानी गुरुओं द्वारा दत्तात्रय ने उतना ही लाभ उठाया, जितना एक पहुँचे हुए सिद्ध गुरु से उठाया जा सकता है। इस युग में भक्ति का उपहास उड़ाया जाता है, पूजनीय वस्तुओं में दोष ढूँढे जाते हैं, और श्रद्धा विश्वास को भ्रम जाल कहा जाता है। कहने वालों को हम झूठा नहीं कहते, क्योंकि पंच तत्वों के बने हुए इस प्रपंच में भ्रम या त्रुटियों के अतिरिक्त और भला हो ही क्या सकता है ? सत्य तो केवल परमात्मा है। उसके अतिरिक्त और जो दिखाई पड़ता है भ्रम है, मिथ्या है। कौन कहता है कि पत्थर की प्रतिमा ईश्वर है या हाड मॉस का मनुष्य किसी का गुरु है। जो खुद भी चल फिर न सके वह कैसा ईश्वर है, जो

अपने विकार भी दूर न कर सके वह कैसा गुरु ? तत्वज्ञानी जानते हैं कि यह वस्तुएँ साध्य नहीं साधन हैं। आत्मा अपने आप अपना विकास या पतन करता है, बाहरी वस्तुएं तो सहायता मात्र हैं। परन्तु स्मरण रखिये मनुष्य को इन साधनों की अनिवार्य आवश्यकता है। विना साधनों के साध्य तक पहुँच जाना असंभव है।

विश्वास जब अधिक दृढ़ होते हैं, तो वे भी मूर्तिमान हो जाते हैं। भूत प्रेतों को हम असत्य नहीं कहते। वे होते हैं और कई बार अपने प्रत्यक्ष अनुभव देते हैं, परन्तु अनेक बार हमारे विश्वासों की प्रतिमायें ही भूत रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। यदि तुम विश्वास करलो कि अमुक बरगद पर भूत रहता है और अन्धकार के समय वहाँ जाओ तो पेड़ की कोई टहनी ही भूत बन जायगी और उसमें हाथ पाँव मुँह आदि सारे अङ्ग भूत जैसे उगा आवेंगे। हो सकता है, कि वह चले फिरे भी और कुछ बात चीत भी करे। असल में वह बरगद का भूत नहीं था, वरन् विश्वास का भूत था। जैसे कि मूर्तिपूजकों को मूर्तियाँ अपना प्रभाव दिखाती हैं। देखा गया है कि अधिकांश भूत उन्हीं लोगों पर असर करते हैं, जो उन पर विश्वास करते हैं। हाँ, उन थोड़ी सी घटनाओं की बात अलग है, जिनमें वास्तविक प्रेतों का समावेश होता है। तान्त्रिक अनुष्ठानों के द्वारा मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, स्थम्भन तथा अन्य प्रकार के भले बुरे काम होते हैं। इन क्रियाओं में कितने ही बार ऐसा देखा जाता है, कि कुछ चमत्कारिक कार्य ऐसे होते हैं, मानो कोई दूसरा अप्रत्यक्ष व्यक्ति हाथ पाँव से इन कामों को कर रहा है। यह कार्य किसी भूत प्रेत के नहीं; वरन् तान्त्रिक की भावना प्रतिभा के द्वारा होते हैं। छाया पुरुष कई व्यक्तियों को सिद्ध होता है, यह कोई और चीज नहीं है, केवल अपने विद्युत परमाणुओं के द्वारा विश्वास के

आधार पर रची गई एक सजीव मूर्ति है, जो सूक्ष्म तत्वों के कारण बनी हुई होने के कारण सूक्ष्म ज्ञान रखती हैं और कितने ही काम शरीरधारी की भाँति या उससे भी अच्छी तरह कर सकती है, यद्यपि उसकी स्थूल देह नहीं होती। कर्ण पिशाचिनी, यक्षिणी, भैरवी, दिव्यस्वप्न आदि की सिद्धियों में भी आत्म तेज के कुछ प्रबल चित्र बन जाते हैं, जो उग्र साधन द्वारा गहरे जमाये गये विश्वास की मात्रा के अनुसार कार्य करते हैं। देवताओं का या ईश्वर का दर्शन होना, दिव्यवाणी सुनाई पड़ना, या किन्हीं व्यक्तियों में कुछ विशेष चमत्कारिक शक्तियाँ होना यह सब मानवीय विद्युत के मूर्तिमान और जीते जागते चमत्कार हैं।

स्त्री पुरुष का आकर्षण।

स्त्री और पुरुष के शरीरों में अलग अलग प्रकार की विद्युत धाराओं का विशेष प्रवाह होता है। स्त्री के शरीर में निगेटिव (आकर्षण) और पुरुष के शरीर में पोजेटिव (विकर्षण) विद्युत अधिक मात्रा में होती हैं। युवावस्था में नवीन रक्त होने के कारण यह धारायें भी अधिक मात्रा में होती हैं। किन्तु दोनों ही एकाङ्गी होती हैं। दोनों के मिलने पर दोनों शरीरों का लाभ होता है। युवा स्त्री और पुरुषों के शरीर जब आपस में मिलते हैं, तो दोनों को लाभ होता है और शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों के विकास में मदद मिलती है। दोनों की अपूर्णता दूर होती है। संसार की जन गणना बताती है, कि विश्व भर में विवाहितों की अपेक्षा अविवाहित लोग अधिक बीमार पड़ते और अधिक मरते हैं। आप विधवा व विधुरों में शारीरिक कान्ति और अच्छा स्वास्थ्य नहीं देख सकते, वे सदा किसी न

किसी रोग का रोना रोते रहेंगे। इस सचाई को सुन कर चौंकने की जरूरत नहीं है। हम अखण्ड ब्रह्मचर्य या दीर्घ कालीन ब्रह्मचर्य के विरोधी नहीं हैं, और न यह शरीर शास्त्र का सत्य सिद्धान्त ही उसके विपक्ष में है। जो लोग योग की विशिष्ट क्रियाओं द्वारा वीर्य की प्रचंड शक्ति को अपने काबू में करके पूरी तरह रोक कर उसे दूसरी तरफ व्यायाम या ज्ञानोपार्जन में खर्च कर सके वे वैसा करें। वे दीर्घकाल तक ब्रह्मचारी रह सकते हैं। परन्तु उन कुछ अपवादों के कारण शरीर शास्त्र की सचाई में परिवर्तन नहीं किया जा सकता। मध्यम श्रेणी के लोगों के लिये यह आवश्यक है, कि वे विवाहित जीवन व्यतीत करें और स्त्री पुरुष आपस में मिल कर अपने शरीरों के अभाव की पूर्ति करते हुए स्वाभाविक जीवन व्यतीत करें। आयुर्वेद तथा पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्र इस बात में एक मत हैं कि साधारण विचारों के लोग यदि बहुत काल तक अपनी काम वासना को मारते रहें तो उन्हें प्रमेह, नपुंसकता या इसी प्रकार के अन्य रोग हो जाते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण विधवा और विधुरों का अस्वस्थता हम घर घर में देख सकते हैं। अनुभव बतलाता है कि गृहस्थ धर्म पालन करने पर दोनों ही पक्षों को लाभ होता है। हानि केवल गर्भाधान क्रिया की मर्यादा को भंग करने में है। जो भोजन बनाने की क्रिया में गलती करता है, वह परिणाम में कड़ुवी रोटी खायगा, किन्तु इस दोष के कारण यह नहीं कहा जा सकता कि रोटी का स्वाद कड़ुआ होता है।

सम वय के स्त्री पुरुषों को विवाहित होना चाहिये, क्यों कि मनुष्य जितनी अधिक आयु का होता जाता है, उतनी ही उसकी शोषक शक्ति बढ़ती जाती है। छोटा पौदा अपने आस पास की जमीन से थोड़ी सी खुराक खींचता है किन्तु बड़ा पेड़ बहुत दूर दूर से जमीन में बहुत गहराई से खुराक खींच लाता

है। इसी प्रकार जोड़े में जो अधिक आयु का होगा, वह छोटी उम्र् वाले को चूँसेगा। आयुर्वेद बतलाता है, कि छोटी उम्र् की स्त्री के सहवास से बल बढ़ता है, समान से सम रहता है, और अधिक आयु वाली से बल क्षीण होता है। ठीक यही बात स्त्री के संबंध में है, यदि उसका पति छोटी आयु का है तो पुष्ट होगी, बराबर की है तो समान बल रहेगा और अधिक आयु का है, तो क्षीण होजायगी। पुरुष जाति इस सिद्धान्त को बहुत प्राचीन काल से जानती आरही है, और उसे अच्छी तरह व्यवहार में लाती है। किन्तु इस व्यापक सत्य को उसने बड़ी बुद्धिमानी के साथ छिपाये रखा है, ताकि स्त्रियों में असंतोष पैदा न होने पावे। हम में से कोई अपने लड़के का विवाह उससे बड़ी लड़की के साथ नहीं करता। एकाध वर्ष स्त्री बड़ी हो तो वह सम ही गिनी जायगी। इस पर भी समाज में इसे ठीक नहीं समझा जाता कि बहू वर की बराबर उम्र् की हो। परन्तु ऐसा तो कहीं भी नहीं देखा जाता कि २५ वर्ष की लड़की की शादी १४ वर्ष के लड़के के साथ हो, क्यों कि इसमें लड़के को हानि अधिक है। यही बात लड़की पर लागू होती है। उसका पति उससे जितना ही उम्र् में अधिक होगा, उतनी ही उसे हानि है। अधिक आयु का पति कम उम्र् की स्त्री का निश्चय ही शोषण करता है। बड़ी उम्र् के पुरुष जब दूसरी तीसरी शादी करके छोटी बहू लाते हैं, तो उनके शरीर उसके जीवन तत्वों का शोषण करने लगते हैं, जैसे अमरबेल जिस पेड़ पर छा जाती है, उसका रस खींच कर स्वयं बलवान होती रहती है। वृद्धावस्था में विवाह करने वाले पुरुषों की आयु बढ़ जाती है। इनका स्वास्थ्य भी सँभल जाता है, किन्तु स्त्री बहुत ही अल्प समय में निस्तेज और बुड्ढी हो जाती है। जो पिता धन के लोभ से अपनी लड़कियों की शादी वृद्ध

पुरुषों के साथ कर देते हैं, वे उसे तिल तिल करके अपना जीवन दूसरे को चटाने के लिये असह्य छोड़ देते हैं। आपने देखा होगा कि वयस्क पुरुषों की अल्पायु स्त्रियाँ अक्सर बीमार पड़ी रहती हैं और उनका मन सदा दुखी और निराश बना रहता है, वे नहीं जानतीं कि इसका वास्तविक कारण क्या है? यदि जान भी लें तो बेचारी कर भी क्या सकती हैं? जिस प्रकार किसी ग़रीब की गहरी कमाई को जबरदस्ती छीन कर खाना पाप कर्म है, उसी प्रकार वृद्ध विवाह भी है। दुःख की बात है कि पुरुष जाति अपने स्वार्थ पर न्याय का बलिदान कर रही है।

सहवास के समय शारीरिक अङ्ग उत्तेजित होते हैं और उनकी उष्णता बढ़ती है, यह बढ़ी हुई उष्णता एक दूसरे के अङ्गों में प्रविष्ट होती है। शरीर की सब से प्रबल और सजीव श्लेष्मा वीर्य है। स्खलन के समय दोनों की आन्तरिक शक्ति का पात होता है। इस विद्युतधारा को गुप्त अङ्गों द्वारा दोनों ग्रहण करके अपने अन्दर धारण कर लेते हैं। इस प्रकार दोनों के गुण-कर्म-स्वभावों का एक दूसरे में परिवर्तन होने लगता है। एक समान वस्तुएँ आपस में आकर्षित होती हैं, यह विज्ञान का आद्य नियम है। स्त्री के विद्युत कण पुरुष के शरीर में और पुरुष के स्त्री के शरीर में व्याप्त हो जाते हैं, वे अपने मूल जन्म स्थान की याद करके बार बार उसी ओर खिंचते हैं, जैसे कोई परदेशी बार बार अपने घर का स्मरण करता है। इसी प्रकार दोनों के विद्युत कण एक दूसरे की ओर खिंचते रहते हैं। इसी विद्युत क्रिया को दाम्पत्ति प्रेम कहते हैं। दोनों में बड़ी ममता बढ़ जाती है। अन्य प्रिय जनों से उतना प्रेम नहीं होता, जितना दम्पत्ति में होता है। विद्युत कणों के दूसरे शरीर में जाने पर प्रेम बढ़ता है, इसका दूसरा प्रमाण सन्तान प्रेम है। माता पिता के शरीर के कुछ भाग

से सन्तान का शरीर बनता है, इसलिये वह भाग अपने मूल स्थान की ओर खिंचते और खींचते रहते हैं। सन्तान के शरीर में पिता की अपेक्षा, माता का भाग अधिक लगा होता है, इसलिये बच्चों में पिता की अपेक्षा माता की ममता अधिक होती है।

स्त्री पुरुष के साथ साथ रहने से एक दूसरे को प्रोत्साहन मिलता है और प्रसन्नता होती है। यह बुरी प्रथा है कि स्त्रियाँ बाहर के पुरुषों से तो बात चीत करें, परन्तु घर में पति के आने पर घूंघट निकाल लें या उनसे बात न करें। यह प्रथा मनोविज्ञान की दृष्टि से बहुत ही खराब है और इसे जितनी जल्दी हो सके छोड़ना चाहिये। भारत में स्त्रियाँ पतियों के साथ बाहरी काम काजों में साथ साथ काम नहीं कर सकतीं, तो भी इतना तो होना ही चाहिये कि जब वे घर आवें तो स्वतन्त्रता पूर्वक बोल चाल सकें। सात्विक सहवास यही है कि स्त्री पुरुषों को आपस में अधिक सम्भाषण की पूरी सुविधा और स्वतंत्रता प्राप्त हो। कभी कभी विशेष अवसरों पर आलिंगन आदि भी। गर्भाधान क्रिया मर्यादा से बाहर कदापि न जानी चाहिये। जब निद्रा लेने का समय हो जाय उसके उपरान्त तो स्त्री पुरुष को एक शय्या पर कदापि न सोना चाहिये, क्यों कि दोनों के शरीर एक दूसरे को खींचने वाले चुम्बक से भरपूर होते हैं, इसलिये सोते समय भी एक दूसरे को खींच कर अनावश्यक काम जागृत करते हैं और निद्रा को भङ्ग करते हैं। आवश्यकता से अधिक इन्द्रियोत्तेजना और पूरी निद्रा का न आना यह दोनों ही बातें स्वास्थ्य के लिये अहितकर हैं। इसलिये यह स्मरण रखना चाहिये कि जब सोने का समय हो तो दोनों अलग अलग बिस्तरों पर आराम करें।

वेश्या गमन ऐसा है जैसे दावत में सैकड़ों आदमियों की बची खुची थूक लार लगी हुई गन्दी जूठन चाटना। इससे गर्मी,

सुजाक आदि शारीरिक कष्ट होते हैं, सो तो होते ही हैं, मानसिक क्षति कई गुनी अधिक है। वेश्याएँ अपने काम को पाप कर्म जानती हैं। जो व्यक्ति जान बूझ कर पाप कर्म करता रहता है, उसका शारीरिक वातावरण बड़ा ही दुष्ट और घातक हो जाता है। ऐसे वातावरण के प्रभाव से बचे रहना कठिन है। वेश्या के पास जो लोग आते हैं वे सभी प्रायः पाप कर्मा होते हैं, वे अपनी अपनी सौगात वेश्या के मन पर छोड़ते जाते हैं, ऐसे असंख्य दुराचारियों की विचारधारा वेश्या के शरीर में भरी होती है, उसके निकट आने वाला व्यक्ति उसके काले रङ्ग की छाप लिये बिना बच नहीं सकता। वेश्या के शरीर और मन जिन पापमय कृत्यों में दिन भर डूबा रहता है उनका एक वायुमण्डल तैयार हो जाता है, उस वायु मण्डल में एक बार फँस कर फिर पीछा छुड़ाना बहुत ही मुश्किल है। वेश्यालय, मदिरालय, द्यूतगृह या अन्य ऐसे ही स्थानों में व्याप्त, असंख्य लोगों की दुर्वासनाऐं नये आदमी के पीछे डाकिनी की तरह चिपट जाती हैं और उसे खींच खींच कर उसी नारकीय रङ्ग में अधिकाधिक रँगने को वाध्य करती हैं, फल स्वरूप इनके चक्कर में पड़ जाने वाला आदमी उच्च जीवन से पतित होकर पाप और नरक की ज्वाला में जलने लगता है। पर स्त्री गमन में भय और सामाजिक दण्ड की आशङ्का भरी रहती है। यह आशङ्का और भय प्रथम तो समागम को निरानन्द बना देते हैं, दूसरे वे भय के विचार मन में जमा कर अन्य शारीरिक और मानसिक उपद्रव उत्पन्न करते हैं, अतएव इससे भी वेश्या गमन की ही भाँति बचना चाहिये।

सत्संग।

मनुष्य दूसरों की विद्युत शक्ति को भी खींच कर अपने अन्दर धारण कर सकता है। संगति का भला बुरा असर होना

प्रसिद्ध है। दुष्टों के संग से मनुष्य वैसा ही बनने लगता है और सत्संगति में रह कर सुधर जाता है। कारण यह है कि जिस प्रकार पुष्प अपनी गन्ध के परमाणु हर घड़ी वायु में फेंकता रहता है, उसी प्रकार मनुष्य शरीर भी अपनी शारीरिक विद्युत के परमाणु हर घड़ी इधर उधर उड़ते रहते हैं। जिस प्रकार बग़ीचे का वायुमण्डल सुगन्ध से भर जाता है उसी तरह मनुष्य की शारीरिक विद्युत के परमाणु अपने आस पास वैसा ही घेरा बना लेते हैं, जैसे कि उसके विचार या शारीरिक स्थिति होती है। डाक्टर लोग कहते हैं कि बीमार के पास उसकी बीमारी के कीड़े उड़ते रहते हैं, इसलिये स्वस्थ मनुष्यों को उनसे दूर रहना चाहिये, नहीं तो वे कीड़े उन पर भी आक्रमण करेंगे। डाक्टर लोग खुद बहुत सावधान रहते हैं, रोगी को छूकर वे फ़ौरन् हाथ धोते हैं, जो औज़ार रोगी के शरीर को स्पर्श करता है उसकी भी सफ़ाई करते हैं, वे जानते हैं कि ऐसा न करेंगे तो बीमारी के कीड़े दूसरों पर भी हमला करेंगे। हम नित्य देखते हैं कि एक मनुष्य की छूत दूसरे मनुष्यों को लगती है और कई बार वह भी उसी बीमारी में ग्रसित हो जाते हैं। यहाँ शब्दों के फेर के कारण लोग समझने में कुछ भ्रम करते हैं। कीड़े या जर्म्स शब्द से यह न समझ लेना चाहिये कि यह घुन चींटी या दीमक जैसे कीड़े होते हैं। यदि यह इसी प्रकार के होते, तो केवल उन्हीं लोगों पर असर करते जो उन्हें छूता, परन्तु यह तो पास जाने पर बिना छुए हुए भी असर करते हैं। तब क्या यह मक्खी, पतंग या तितली की तरह पङ्खों से उड़ने वाले होते हैं? नहीं यह इस तरह के भी नहीं होते, वास्तव में यह किसी तरह के नहीं होते, इनका रङ्ग रूप दुनियाँ के किसी भी कीड़े से नहीं मिलता। जीव का प्रधान चिह्न उसके हाथ, पाँव, नाक, आँख, मुँह आदि इन्द्रियाँ हैं, ऐसी कोई भी इन्द्रिय इनमें नहीं देखी जाती, फिर यह जीव या

कोड़े किस प्रकार हुए ? असल में यह जर्म्स मनुष्य शरीर में से हर घड़ी निकलने वाली बिजली के परमाणु मात्र हैं। सूक्ष्म दर्शक यन्त्र से देखने पर यह परमाणुओं की शकल में देखे जाते हैं और उनके दोनों सिरों पर निगेटिव और पोजेटिव धाराओं के अंश अनुभव किये जाते हैं। हमारे मत की पुष्टि इस बात से भी होती है कि यह हर व्यक्ति पर असर नहीं करते। जैसे कि बिजली हर चीज़ पर असर नहीं करती। अस्पतालों में परिचायक छूत के रोगियों की परिचर्या करते हैं, पर वे बीमार नहीं पड़ते। घरों में भी छूत की बीमारी सब को नहीं लगती, जो लोग निर्भय रहते हैं। परवाह नहीं करते, अपना मन मज़बूत रखते हैं, उनके ऊपर असर नहीं होता, किन्तु जो डरते हैं, घबड़ाते हैं वही बीमार पड़ते हैं। डरने का अर्थ उन विद्युत परमाणुओं को आकर्षित करना और निर्भय रहने का अर्थ उन्हें दुतकार देना है। यह जर्म्स बिना बुलाये किसी पर नहीं जाते, जैसे कि बिजली की प्रचण्ड शक्ति भी विरोधी वस्तुओं पर असर नहीं करती। यदि यह कीड़े मामूली कीड़ों की तरह होते तो किसी के बुलाने न बुलाने की परवाह न करते और जैसे चींटी हर दीवार पर चढ़ जाती है, वैसे ही यह रोग कीट भी हर एक मनुष्य पर चढ़ दौड़ते, परन्तु ऐसा नहीं होता।

यह न समझना चाहिये कि यह जर्म्स बीमार आदमियों के शरीर में से ही निकलते हैं। यह तो हर मनुष्य के शरीर से हमेशा हर हालत में निकलते रहते हैं, जैसे कि पानी में से भाप। मामूली तौर से हमें पानी में से भाप उठती हुई दिखाई नहीं देती परन्तु वर्तन में रखा हुआ पानी धीरे धीरे घटने लगता है और कुछ समय में सूख जाता है। इससे सिद्ध होता है, कि यद्यपि हमें दिखाई नहीं देता तो भी सदैव पानी धीरे धीरे उड़ता रहता

है। रोगी और निरोग सभी मनुष्यों के शरीर में से विद्युत परमाणु उड़ते रहते हैं और जैसे वह होते हैं अपना असर दूसरों पर डालते रहते हैं।

अन्य जीव जन्तुओं में निरोधक शक्ति नहीं होती इसलिए उन पर इन परमाणुओं का विशेष असर होता ही है, ऋषियों के आश्रम के निकट पहुँचते पहुँचते सिंह आदि हिंसक पशु तक अपना स्वभाव भूल कर प्रभावित हो जाते हैं, किन्तु मनुष्य दूसरी ही प्रकार का प्राणी है, इसमें परमात्मा ने निरोधक शक्ति प्रबल मात्रा में दी है। उसकी इच्छा बिना कोई असर उस पर प्रायः नहीं पड़ता। साधारणतः लोगों में यह निरोधक शक्ति बहुत कम मात्रा में पाई जाती है। इसलिये वे किसी नई बात को देखने पर आम तौर से उससे प्रभावित हो जाते हैं, किन्तु यदि कोई व्यक्ति उस विषय से बिलकुल अपरिचित हो या दृढ़तापूर्वक उसका प्रतिरोध करता हो तो उस पर कुछ भी प्रभाव न होगा। अक्सर लोगों को अँधेरे में डर लगता है, किन्तु जंगली लोग जिन्हें अँधेरे में ही काम करना पड़ता है, इस बात को नहीं जानते कि अँधेरे में कोई डर की बात है इसी प्रकार एक मनस्वी व्यक्ति विश्वास करता है कि मुझे कोई भय नहीं डरा सकता, अतएव वह भी अँधेरे में निर्भय विचर सकता है। महान् पुरुषों के निकट वातावरण में आने पर असंख्य मनुष्यों पर असर पड़ता है। गांधी जी के विचारों से असंख्य मनुष्यों की जीवन दिशा बदल गई, उनके अन्दर मानसिक क्रान्ति हो गई, किन्तु उनका झोंपड़ा बनाने वाले मजूर या अन्य ऐसे ही अज्ञानी मनुष्यों पर उनका कुछ भी असर नहीं हुआ, यद्यपि वे उनके साथ रहते रहे। इसी प्रकार एक दृढ़ विरोधी व्यक्ति पर भी उनका कुछ असर नहीं होता, यद्यपि वह उस महापुरुष की तुलना

में सब प्रकार नगण्य है। गाँधी जी के एक पुत्र पर उनका रत्ती भर भी असर नहीं है, यद्यपि वह उनके निकट संम्पर्क में आता है।

उपरोक्त पंक्तियों में हमारा यह बताने का अभिप्राय है, कि दूसरों के शरीरिक और मानसिक शक्ति सम्पन्न विद्युत परमाणुओं को मनुष्य चाहे तो गहरे अज्ञान या प्रवल मनस्विता के द्वारा रोक भी सकता है। शेप दशाओं में उनका असर दूसरों पर अवश्य होता है। उपरोक्त अपवाद हजारों घटनाओं में कहीं एकाध वार देखे जाते हैं अन्यथा साधारणतः मनुष्यों की मानसिक स्थिति ऐसी ही रहती है कि वे नये प्रभावों को ग्रहण करें। वालकों में न तो गहरा अज्ञान होता है। (क्योंकि इस समय उनके पूर्व संस्कार पूर्णतः सुप्त हो कर नये साँचे में नहीं ढल गये होते) और न निरोधक शक्ति का विकास होता है, इस लिए वे जैसे लोगों के साथ रक्खे जावेंगे निश्चय वैसे ही बन जावेंगे। इसमें भी कुछ अपवाद पाये जाते हैं, कुछ बालक माता पिता से विरुद्ध गुण–स्वभाव के होते हैं, इसका कारण उनके प्राचीन अत्यन्त प्रवल संस्कार समझने चाहिये। उपरोक्त कुछ अपवादों को छोड़ कर शेप निन्यानवे प्रतिशत लोगों पर संगति का असर होता है। किसका असर, किस पर, कितना होगा? यह एक प्रकार की कुश्ती है जिसकी धारणा योग्यता और आकर्पण शक्ति जितनी अधिक होगी वह दूसरों को उतना ही अधिक अपनी ओर आकर्पित, प्रभावित कर लेगा। रोज हम लोग बहुत से लोगों से मिलते जुलते हैं, पर कोई खास असर हमारे ऊपर नहीं होता, क्योंकि उनके विद्युत परमाणु साधारण दर्जे के होते हैं, और हमारे मन से टकरा कर लौट जाते हैं, किन्तु विशेष शक्ति रखने वालों का असर अवश्य ही हमारे ऊपर होता है। विशेष

रूप से भले या विशेष रूप से बुरे लोग ही किसी को प्रभावित कर सकते हैं, हमारे मन में जिस प्रकार के विचारों के बीज होते हैं, उसी तरह के लोगों की ओर आकर्षित होते हैं, और उनके सहवास से अपने उन बीजों पर वृक्ष रूप से चढ़ा लेते हैं, तब कहा जाता है कि अमुक मनुष्य का अमुक प्रकार का असर इस पर हुआ है। जब तक सांसारिक अनुभव परिपक्व दशा में नहीं होता तब तक दोनों तरफ झुक सकने का अंदेशा रहता है, नवयुवकों में हर हवा का विरोध कर सकने की क्षमता नहीं होती और वे जैसा देखें उसी तरफ बह सकते हैं। कई अधिक उम्र के व्यक्ति भी ऐसा ही मुलायम मन लिये होते हैं और वे दूसरों से बहुत जल्द प्रभावित होते हैं किन्तु जीवन की एक दिशा निर्धारित हो जाने, कुछ सिद्धान्त निश्चित कर लेने पर अपने विषय का ही प्रभाव पड़ता है, अन्य प्रकार के असर व्यर्थ हो जाते हैं।

आपको अपना जीवन जिस ढाँचे में ढालना हो उस प्रकार के प्रतिभाशाली लोगों का सत्सङ्ग कीजिये और उन के निकट श्रद्धा के साथ, आदर पूर्वक, विनम्र होकर जाइये। नम्र होने का तात्पर्य अपने अन्दर अधिक ग्राहक शक्ति उत्पन्न करना है— "तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया" अर्थात् प्रणाम करके, सेवा करने और प्रश्न करके ज्ञान को प्राप्त करो। अहङ्कार युक्त उद्धत स्वभाव के साथ सत्संग करने का अर्थ अपने अन्दर निरोधक शक्ति को भर लेना है, इससे उसको कुछ भी लाभ न मिलेगा। जिससे कुछ प्राप्त करना हो उस पर श्रद्धा करते हुए नम्रता पूर्वक निकट जाओ, ऐसा करने से तुम्हारी आकर्षण शक्ति बढ़ जायगी और उन महानुभाव के आस पास उड़ते हुए परमाणुओं को अपने अन्दर खींच सकोगे, पवित्र लोगों के निवास स्थानों पर बैठने से ही अपने अन्दर बड़ी शान्ति प्राप्ति होती है, और बुद्धि का विकास होता हुआ दृष्टिगोचर होता है।

दो व्यक्ति जब एक दूसरे को कुछ देने लेने की दृष्टि से एकाग्र होकर सत्संग करते हैं, तो उसका फल बहुत ही चमत्कारिक होता है। दोनों की एकाग्रता होजाने से दोनों आपस में संबद्ध हो जाते हैं, एक व्यक्ति अपना ज्ञान दूसरे पर फेंकता है और दूसरा उसे पूरी तरह पकड़ता है, वह ज्ञान ग्राहक के अन्तःकरण में बहुत गहरा उतर जाता है, मामूली काम काज का ज्ञान, लोक व्यवहार की शिक्षा, मन और बुद्धि तक ही सीमित है, इस लिये यह इतने प्रभावशाली और आनन्ददायी नहीं होते, कारण ? देने वाले के भौतिक ज्ञान और लेने वाले की भौतिक बुद्धि में ही यह आदान प्रदान होकर ऊपर-उथला ही रह जाता है, फिर भी मनो योग पूर्वक सिखाया या सीखा हुआ ज्ञान स्थायी होता है। किन्तु आध्यात्मिक शिक्षा के साथ केवल वाचक ज्ञान नहीं होता अपितु उसके साथ आंत्मिक अनुभूति भी होती है। इस लिये वह वाचक ज्ञान की अपेक्षा हजारों गुना अधिक प्रतिभा सम्पन्न होता है। और उसमें ऐसी प्रजनन शक्ति होती है, कि उसके परमाणु को भी कोई व्यक्ति अपनी अन्तरात्मा में ग्रहण करले तो वह वीज अपने आप अपना वंश विस्तार करता है। और गुरु के अन्दर जितना ज्ञान था वह अनायास ही अपने अन्दर उग पड़ता है। दीक्षा का आध्यात्मिक दृष्टि से बड़ा महत्व है, इस में समर्थ गुरू अत्यन्त मनोयोग पूर्वक शिष्य को गहरा आध्यात्मिक भूमिका तक नीचा उतर कर अपने कुछ वीजाणुओं को इंजेक्शन की भाँति वहाँ पनपने के लिए छोड़ देता है। यह बीज अमर होकर उसके अन्तराल में पड़े रहते हैं और यदि सिंचन हुआ तो बहुत जल्द फलित हो उठते हैं अन्यथा किसी भी दशा में मरते नहीं और जब भी कभी अवसर पाते हैं हरे हो जाते हैं। आज दंभी और अयोग्य व्यक्ति 'गुरु दीक्षा जैसे अत्यन्त दुरूह संस्कार को करने का साहस कर डालते हैं। वे धनके लालच से इस उच्च

कोटि की योगिक क्रिया को भी तमाशा बनाते हैं और इसका उपहास कराते हैं यह कितने दुख और लज्जा की बात है। उच्च आत्माओं द्वारा दी हुई दीक्षा निष्फल नहीं जा सकती, उसकी प्रतिक्रिया बहुत ही जल्द दिखाई देने लगती है। शक्ति पात की गुह्य दीक्षा तो मनुष्य को दूसरे ही रूप में बदल सकती है। कई योगी सिर पर हाथ रख कर शिष्य की कुंडलिनी शक्ति जागरित कर देने की क्षमता रखते हैं। हमारे अपने अनुभव में कई ऐसे महात्मा आये हैं, कि वे जब अपना आत्मिक तेज उग्र करते हैं तो उनके शरीर में बिलकुल बिजली जैसी धारा चल उठती है, उनके शरीर को उस समय छूने पर बिलकुल बिजली से भरे हुए तारों को छूने के धक्के का अनुभव होता है।

यहां हम बहुत आगे की बातें कह गये। पाठकों को इतना आगे जाने की जरूरत नहीं। उन्हें तो इतना ही जानना चाहिए कि सत्संग का लाभ विनम्र बनकर उठाया जा सकता है। उत्तम विचार वाले प्रबल मनस्वियों के निकट जाने का अवसर ढूँढते रहना चाहिये और जब जब ऐसे प्रसंग आवें लाभ उठाना चाहिये। यदि तुम्हारा काम काज करने का या रहने सहने का प्रबंध उत्तम विचारवान लोगों के साथ हो सके तो अन्य प्रकार का कष्ट उठा कर भी वैसा करना चाहिये, क्यों कि उसके द्वारा जो लाभ होता है, वह अकथनीय है। सत्संग की महिमा को वर्णन करना हमारी शक्ति से बाहर की बात है। पारस के सत्संग में लोहा सोना बन जाता है, किन्तु आत्मा के सत्संग से जीव परमात्मा बन जाता है।

शरीर से निकट बैठकर सत्संग करना सबसे उत्तम है। परन्तु जहां ऐसी सुविधा न हो वहां अन्य प्रकार से भी यह हो सकता है। अपने जिन विचारों को तुम पुष्ट करना चाहते हैं, उसके लिये मानवीय व्यक्तियों से पत्र व्यवहार करो, उनके हाथ

के लिखे हुए पत्र औषधि की तरह बड़ी प्रेरणा भरे हुए होते हैं। पत्र का कागज उनके हाथ में आता है, और उनके विचारों से लद जाता है। पानी में बिजली को पकड़ने की बड़ी ताकत है। स्याही के साथ वे विचार कागज से चिपक जाते हैं। यह पत्र आधे मिलन का काम देता है। प्राचीन महापुरुषों की हस्त-लिपियों को बहुत अधिक मूल्य में लोग खरीदते हैं क्यों कि उन कागजों में उन महानुभावों के जीवित विचार चिपके हुए हैं। तुम्हें जब अपने किसी मित्र का पत्र मिलता है, तो निश्चय ही उससे आधे मिलन का अनुभव करते होगे। सत्संग का यह दूसरा उपाय बहुत ही महत्वपूर्ण है।

छपी हुई पुस्तकें भी अपने लेखक की भावनाओं को धारण किये रहती हैं। यद्यपि छापेखाने की स्याही के साथ उन विचारों का कोई सम्बन्ध नहीं, परन्तु उन व्यक्तियों को पढ़ते ही ठीक उसी प्रकार के विचार अपने मन में उत्पन्न होते हैं, जैसे कि उस पुस्तक को लिखते समय लेखक के मन में उत्पन्न हुए थे। 'परकाया प्रवेश' पुस्तक में बताया जा चुका है, कि विचारों का कभी नाश नहीं होता। जो विचार मस्तिष्क से निकलते हैं, वे अनन्त काल तक ईथर तत्व में मंडराते रहते हैं और कोई जब उनके समान विचार करता है, तो दौड़कर वहीं पहुँच जाते हैं। यदि किसी प्रबल मनस्वी व्यक्ति के वे विचार हैं, तो सशक्त होंगे और अधिक असर करेंगे। पुस्तक के अक्षर पढ़ते ही जो विचार हमारे मन में उत्पन्न होते हैं, वे ही लेखक के विचार वायु मंडल में घूम रहे हैं, इस अवसर पर वे अविलम्ब दौड़ पड़ते हैं, और पढ़ने वाले के विचारों के साथ सम्मिलित हो जाते हैं, और लेखक सत्संग का आनंद अनुभव करने लगता है। विचारों के परमाणुओं के गति इतनी तीव्र है, कि एक सैकिंड में तीन बार पृथ्वी की परिक्रमा कर सकते हैं

इसलिये चाहे वह लेखक कितनी ही दूर रहा हो, उसके विचारों को तुम्हारे पास तक पहुँचने में तनिक भी विलम्ब न होगा। लेखक ने जितने मनोयोग के साथ उन विचारों को लिखा होगा, उतना ही उसका अधिक असर होगा। हलके तौर से या इधर उधर की यों ही जो पुस्तकें लिखी जाती हैं, उनका पाठकों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं होता। यहां तक कि वे अच्छी तरह उसे समझ भी नहीं पाते, चाहे भाषा कैसी ही साधारण क्यों न हो। उत्तम विचारों की और अधिकारी लेखकों द्वारा लिखी हुई पुस्तकें पढ़नी चाहिये, और यदि उनसे विशेष लाभ उठाना है, तो लेखक का चित्र ध्यान में रखते हुए यह समझते जाना चाहिये, कि यह लेखक मेरे सामने बैठ कर ही इन बातों को समझा रहा है। इस दृष्टि से पुस्तकों में लेखक का चित्र होना जरूरी है। उत्तम पुस्तकों के सत्संग से भी हम पर्याप्त लाभ उठा सकते हैं।

विचारों का गंभीर मनन और खोज संबन्धी बारीक काम तो एकान्त और शान्त वातावरण में होता है, परन्तु दबी हुई आत्म शक्ति को उभारने के लिए सामूहिक सत्संग में बड़ा बल मिलता है। जब बहुत से लोगों के मन एक बात पर एकत्रित होते हैं, तो उनकी सम्मिलित शक्ति बड़ी जोरदार हो जाती है, और वह जब लौट कर जब उपस्थित लोगों के पास जाती है, तो उनमें उत्साह और स्फूर्ति भर देती है। सभा, जुलूस, कमेटी, दरबार, पंचायत, में शामिल होने पर तत्संम्बन्धी विचारों का अधिक प्रभाव होता है। सामूहिक प्रार्थना, सत्संग या संकीर्तन द्वारा भी उन उन विचारों को बड़ा प्रोत्साहन मिलता है। यदि कई आदमी साथ साथ अभ्यास करें, संघ बनाकर सत्संग किया करें, तो उन्हें एकान्त की अपेक्षा अधिक स्फूर्ति मिलेगी। परन्तु स्मरण रहे इस का फल शक्ति का उदय करने तक ही है

किसी वस्तु का अन्वेषण या तत्व प्राप्ति तो एकान्त में ही हो सकती है।

बिना किसी वस्तु की सहायता के एक नियमित समय पर यदि दो व्यक्ति एकाग्र होकर बैठें और अपने विचार एक दूसरे को भेजने का प्रयत्न करें, तो थोड़े दिनों के अभ्यास से ही उन्हें आशातीत सफलता मिल सकती है। प्रारंभिक दशा में भी उन्हें जो संदेश प्राप्त होंगे, उनमें बहुत से सत्य होंगे। आत्मा निर्मल होगी और एकाग्रता बढ़ती जायगी, तो उसी अनुपात से वे संदेश अधिक स्पष्ट और ठीक सुनाई देने लगेंगे, आध्यात्मिक बिजली द्वारा यह बेतार का तार बड़ी सफलता पूर्वक चल सकता है, प्राचीन काल के ऐसे असंख्य उदाहरणों से इतिहास भरे हुये हैं, आज भी जो इसकी परीक्षा करना चाहें उन्हें संतोष हो सकता है। यहां तक कि दिव्य दृष्टि भी प्राप्त हो सकती है। वैज्ञानिक लोग ईश्वर तत्व की सहायता से टेलीविजन यंत्रों द्वारा एक स्थान के चित्र दूसरे स्थानों को भेजते हैं। आत्मिक पवित्रता, एकाग्रता और अभ्यास द्वारा दूर देशों की घटनाऐं अपने दिव्य चक्षुओं से देखी जा सकती हैं। तुम भी प्रयत्न करो तो सफलता प्राप्त कर सकते हो। थोड़ा सा 'दिव्य दर्शन' तो प्रथम प्रयत्न में भी हो सकता है। एकान्त स्थान में एकाग्रता पूर्वक अपनी दिव्य दृष्टि को किसी स्थान पर भेजोगे, तो वहां के दृश्यों का तुम्हें अनुभव होगा। आरंभ में यह चित्र धुंधले और अशुद्ध भी होंगे, परन्तु आत्मिक उन्नति के साथ इनकी स्पष्टता और सत्यता बढ़ती जायगी। यह सब मानवीय विद्युत के चमत्कार हैं। हम सत्संग द्वारा दूसरों के सद्गुणों को अपने अन्दर धारण करके इस शक्ति का पर्याप्त लाभ उठा सकते हैं।

रोगों का निवारण।

रोगों को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के इलाज चालू हैं, इलाज करने वाले बीमारियों को अच्छा करने के लिये बहुत तरह की दवाएँ बनाते हैं। कई दवाएँ तो सोने, चाँदी या रत्न, जवाहरात से भी अधिक महँगी होती हैं, उन बहुमूल्य दवाओं के गुणगान करने में बड़े-बड़े प्रमाण दिये जाते हैं। परन्तु उन औषधियों को अपनी मनमर्जी से चाहे कोई चाहे जितनी मात्रा में नहीं खा सकता है, यदि उनके सेवन करने या कराने में जरा सी असावधानी हो जाय, तो लेने के देने पड़ सकते हैं। दूसरे उन्हें गरीब आदमी पैसे की कमी के कारण खरीद नहीं सकते। तीसरे बनाने में त्रुटि हुई या रोग का निदान न हो सका, तो उसका कुछ अच्छा असर नहीं आता। इन कीमती दवाओं की अपेक्षा इस अध्याय में हम एक ऐसी दवा बतावेंगे, जो गुण में हर एक बहुमूल्य दवा से बढ़ कर है, कीमत में सब से सस्ती है, सेवन करने में कुछ भी कठिनाई नहीं, हर आदमी के पास हर समय रह सकती है और शर्तिया फायदा पहुँचाती है। इस दवा का प्रयोग किसी भी दशा में व्यर्थ नहीं जा सकता। सच तो यह है कि जब तक इस दवा का थोड़ा बहुत मिश्रण न हो, तब तक अन्य दवादारू कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकतीं। क्या तुम उस दवा को जानते हो? यदि नहीं जानते तो हम बताये देते हैं।

यह दवा है 'मानवीय विद्युत।' रोगी कीटाणुओं के प्रसंग में हमने बताया था कि छूत के रोगों में मनुष्य की विषैली बिजली दूसरों पर असर कर जाती है। तुम्हें जानना चाहिये, जब खराब बिजली में असर करने की ताकत है, खराब

बिजली खराब असर करती है, तो अच्छी जरूर अच्छा असर करेगी। अपनी 'प्राण चिकित्सा विज्ञान' नामक पुस्तक में हम सविस्तार आत्म विद्युत द्वारा विभिन्न रोगों को दूर करने की विभिन्न क्रियाएं बता चुके हैं। उन बातों को पूरे ब्यौरे के साथ यहाँ दुहराना हमें अभीष्ट नहीं है। यहां तो उस सम्बन्ध की थोड़ी सी जानकारी भर दुहरा देना पर्याप्त होगा। हथेली या उँगलियों के पोरुओं (अन्तिम छोरों) में रोग निवारण शक्ति अधिक मात्रा में पाई जाती है। पीड़ित स्थान पर इनका स्पर्श करना चाहिये। जब तुम्हारे पेट में कोई शिकायत हो, दर्द हो रहा हो या कुछ और गड़बड़ हो, तो अपनी हथेलियों को गोलाकार में उस स्थान पर घुमाओ. कुछ देर यह क्रिया दाहिनी ओर से बाँई ओर करो और फिर इसके विपरीत हथेलियों को बांई ओर से दाहिनी ओर गोलाकार में घुमाने लगो। बीच-बीच में थोड़ी ही देर में देखोगे, पेट में उमड़ने वाली वायु घट गई है और दर्द अच्छा हो रहा है। हथेलियाँ जब किसी अङ्ग की त्वचा से रगड़ती हैं, तो वहाँ गर्मी पैदा होती है, यह शारीरिक तेज जिस स्थान पर अधिक उत्पन्न होगा, वहाँ रक्त की चाल बढ़ जायगी, तदनुसार बीमारी को हटना पड़ेगा। यदि सिर में दर्द हो रहा हो, तो वहाँ भी एक हाथ या दोनों हाथों से स्पर्श करना चाहिये। जहाँ फुन्सी, चसक, दर्द, अकड़न, तनाव, खुजली या भारीपन मालूम पड़े, वहाँ उँगलियों के अग्र भाग से या हथेली से धीरे धीरे सहलाना चाहिये, ऐसा करने से उस स्थान के स्वस्थ जीवाणुओं को बल मिलता है और वे अपने आसपास भरे हुए विजातीय द्रव को बाहर निकाल देने के लिए तैयार हो जाते हैं।

हमारे देश में आत्म विद्युत द्वारा रोगों की चिकित्सा करने का घर घर प्रचार है। जब कोई आदमी थक जाता है, तो

उसके पैर दबाये जाते हैं, ताकि उसके निर्बल तन्तुओं के दबाने वाला अपनी बिजली भर दे। देखते हैं कि पैर दबाने के बाद थका हुआ आदमी प्रफुल्लित हो जाता है। मालिश का भी ऐसा ही असर होता है। पहलवान लोग शरीर की मालिश कराने का महत्व जानते हैं। घटी हुई गर्मी को बढाने के लिये वैद्य लोग मालिश कराने का आदेश करते हैं। थक कर चकनाचूर हुए, घोड़े मालिश के बाद अपना सारा श्रम उतार देते हैं सिर को मालिश करने में कुछ नाई आदि ऐसे चतुर होते हैं कि भारीपन और खुश्की मालिश की विशेष क्रियाओं द्वारा बिलकुल दूर कर देते हैं। गठिया, चोट, अशक्तता या दुर्बलता में तेज क साथ मालिश कराई जाती है, सिर जब भारी हो जाता है या बुद्धि ठीक प्रकार काम नहीं करती, तो लोग माथे पर हाथ रख कर बैठ जाते हैं या सिर खुजाने लगते हैं, ऐसा करने से उनका मस्तिष्क फिर से तरोताजा हो जाता है और जो प्रश्न हल नहीं हो रहा था, उसका निराकरण हो जाता है। पलकों पर कभी-कभी एक फुन्सी उठती है, जिसे मथुरा के आसपास 'गुहेरी' कहा जाता है। पलक के ऊपर फोड़े को अच्छा करने वाली किसी तेज दवा का लगाना खतरे से भरा हुआ होता है, इसलिये हथेली पर उँगली घिस कर उस उँगली को पलक पर लगाते हैं और देखते हैं कि वह फुडिया जल्द अच्छी हो जाती है। आँख में अकस्मात कुछ आघात लग जाने पर तत्काल के उपकार यह किया जाता है कि किसी कपड़े को मुँह की भाप से गरम करके आँख पर लगाया जाय, आँख में कैसा ही दर्द हो रहा हो, इस क्रिया से तुरन्त ही लाभ होता है। उँगली या अन्य स्थान पर कुछ चोट लग जाने से स्वभावतः हम उसे फूंकते हैं। बच्चे अपने आप अपनी उँगली को फूंक कर अच्छा कर लेने

का ज्ञान रखते हैं, कई अवसरों पर फूंक द्वारा किसी अङ्ग पर शारीरिक विद्युत का प्रवाह डालने से सन्तोषजन फल निकलता है।

बढ़ी हुई गर्मी को घटाने के लिये मार्जन (Pass) बहुत उपयोगी है। पंखा झलना प्राचीन मार्जन क्रिया की नकल है। जब बुखार चढ़ रहा हो, लू लग गई हो, फोड़े में दाह हो रहा हो, मादक द्रव्यों के कारण गर्मी चढ़ गई हो या अन्य किसी प्रकारसे उष्णता बढ़ जाय, तो दोनों हाथों की उँगलियों को इस तरह रोगी की ओर पसारना चाहिये, जिससे नाखूनों के अन्तिम सिरे बीमारी के पीडित अंग की ओर रहें। अब हाथों के नीचे की ओर इस तरह खींचो, मानो उस स्थान की बढ़ी हुई गर्मी को उँगलियों से चिपका कर पीछे की ओर खींच रहे हैं। यथा अवसर कुछ दूर हाथों को खिसकाने के बाद उन्हें पीछे की ओर खींच लो और एक तरफ इस प्रकार झटकार दे, मानो तुम्हारे हाथ पानी में भीग गये थे और उनकी बूँदों को अलग झटकार दियाहो। इस क्रिया को कुछ देर बार बार करते रहो, तुम देखोगे कि इससे कैसी जल्दी गर्मी घट जाती है और बीमार को शान्ति मिलती है। इस प्रकार की क्रियाओं में इच्छा शक्ति का जितना अधिक समन्वय होता है, उतनी ही शीघ्र और अधिक सफलता मिलेगी।

पीड़ित स्थान पर शारीरिक विद्युत को पहुँचा कर पाठक अपनी और दूसरों की बीमारी में पर्याप्त सहायता कर सकते हैं। बार बार का नया प्रयत्न उन्हें अधिकाधिक सन्तोष के निकट पहुंचाता जायगा।

बच्चों की सावधानी

बच्चों को 'नजर लगना' मानवीय विद्युत का अहित-कर प्रभाव है। कोई व्यक्ति जब एकाग्र होकर या अधिक आक-र्षित होकर किसी की ओर देखता है, तो उसकी दृष्टि प्रभाव शाली हो जाती है। लालायित होकर देखने पर भी ऐसा ही प्रभाव होता है। कोई बच्चा अधिक हंसता खेलता है, प्यारी प्यारी बातें करता है, तो लोगों का ध्यान उसकी ओर अधिक आकर्षित होता है, यदि इस समय अधिक ध्यान पूर्वक उन्हें खिलावें या प्रशंसा करें, तो बच्चों को नजर लग जाती है। मुग्ध होकर अधिक ध्यानपूर्वक उनकी ओर दृष्टिपात किया जाय तो भी नजर का असर हो जाता है। किसी २ व्यक्ति में स्वभावतः एक खास प्रकार की बेधक दृष्टि होती है, यदि वे साधारणतः भी किसी बच्चे की ओर विशेष ध्यान पूर्वक देखें, तो असर हो जाता है। ऐसे लोग जिनके बालबच्चे नहीं होते और बच्चों के लिए तरसते रहते हैं, वे जब दूसरों के बच्चों को हसरत भरी निगाह से देखते हैं तो यह असर अधिक होता है, क्यों कि लालायित होकर देखने से दूसरी चीजों का अपनी ओर आक-र्षण होता है। पति जब परदेशों को जाते हैं, और स्त्री लाला-यित होकर उसकी ओर देखती हैं, तो रास्ते भर पति का चित बेचैन बना रहता है, कभी कभी तो उन्हें वापिस तक लौटना पड़ता है या कुछ ठहर जाना पड़ता है। इसी लिये प्राचीन काल में क्षत्राणियाँ पतियों को युद्ध में भेजते हुए प्रोत्साहन देकर, तिलक लगाकर भेजती थीं, कि यदि हम आकर्षण-विद्युत इनकी ओर फैंकेंगी तो वे पीछे की ओर खिंचे रहेंगे, युद्ध से लौट आवेंगे या असफल रहेंगे। इसी प्रकार जब वयस्क मनुष्य लालायित होकर बच्चों की ओर देखते हैं, तो उन-

बच्चों की शक्ति खिंचती है, और वे उसके झटके को बर्दाश्त न करके बीमार पड़ जाते हैं। बिना किसी पूर्व रूप के जब अचानक बच्चा बीमार पड़ जाता है, तब समझा जाता है, कि उसे नजर लग गई।

हमारे यहाँ की स्त्रियों को इसकी जानकारी बहुत पहले से है। नजर से बचाने और लग जाने पर उपचार की क्रिया में भी वे परिचित हैं। तांबे का ताबीज शेर का नाखून मूंफ, नीलकंठ का पर आदि चीजें गले में पहनाई जाती हैं। यह चीजें बाहरी बिजली को अपने में ग्रहण करके या उसके प्रभाव को रोककर बच्चों पर असर नहीं होने देतीं। गरम लोहे का टुकड़ा पानी या दूध में बुझाने से वह जल या दूध उस असर को दूर करने वाला हो जाता है। कहते हैं कि आकाश की बिजली अक्सर काले साँप, काले आदमी, काले जानवर या अन्य काली चीजों पर पड़ती है। काले कपड़े जाड़े के दिनों में इसलिये पहने जाते हैं, कि गर्मी की बिजली को इकट्ठा करके अपने अन्दर रक्खें और अधिक गरम रहें। इसी नियम के आधार पर नजर बचने के लिए काली चीजों का उपयोग होता है। मस्तक पर काला टीका लगाया जाता है। हाथ या गले में काला डोरा बांधा जाता है। काली बकरी का दूध पिलाया जाता है। काली भस्म चटाई जाती है। जिस प्रकार बड़े बड़े मकानों के गुम्बजों की चोटी पर एक लोहे की छड़ इसलिये लगाई जाती हैं, कि वह स्वयं बिजली का असर ग्रहण करके पृथ्वी में भेजदे और मकान को नुकसान न पहुँचने दे, इसी प्रकार यह काला टीका, डोरा आदि नजर के असर को अपने में ग्रहण कर लेता है, और बच्चों को नुक़सान नहीं पहुँचने देता।

हम नहीं चाहते कि हँसते खेलते बच्चों को नजर लगने के भय से घरों में छिपा कर रखा जाय और उन्हें लोगों के सामने अपनी अमृतमयी वाणी बोलने से रोका जाय ! बच्चे जीते जागते अमूल्य खिलौने हैं, इनके साथ खेलने की सब कोई इच्छा करते हैं, फिर इस स्वर्गीय सम्मेलन में खाई उपस्थित करना किसी प्रकार उचित न होगा। यदि इस भय से मनुष्य के सात्विक आनंद को रोका जाय तो परमात्मा की पवित्र सृष्टि में अङ्गारे बोना होगा। परन्तु अपने मनोरंजन के लिए बच्चों की हत्या कर डालना भी न्यायसंगत न ठहराया जायगा। उसमें चौंकने, बड़बड़ाने या हमें भ्रम प्रचारक कहने की जरूरत नहीं है। कड़ुई सचाई की ओर से आँखें बन्द कर लेना ठीक न होगा। खतरा इसको प्रकट करने में नहीं, वरन् छिपाये रहने में है। यदि वास्तविक बात सर्व साधारण पर प्रकट हो जाय और उससे होने वाली हानि को लोग समझ जावें तो खतरा बहुत ही कम हो जाय।

साधारण रीति से बच्चों के साथ हँसते खेलते रहिए, कुछ हर्ज न होगा। नजर उन्हें तभी लगेगी जब आप हसरत भरी निगाह से देखेंगे। इस प्रकार की दृष्टि के अन्तगत ऐसी भावनाऐं होती हैं कि—'काश, यह बच्चा हमें मिला होता ! मैं इसे पाकर कितना प्रसन्न होऊँगा ! इसकी सुन्दरता कितनी मनोमुग्धकारी है ! भगवान ऐसा बच्चा किसी प्रकार मुझे मिले।" यह बातें आदमी जबान से नहीं कहता और जान बूझ कर यह सोचता भी नहीं, पर उसके मन के भीतर ही भीतर ऐसी गुप्त इच्छा उठती है। कभी कभी तो यह इच्छा इतनी सूक्ष्म होती है कि सोचने वाला यह समझ भी नहीं सकता कि मैंने ऐसी भावना की थी। देखा जाता है कि अजगर अपनी दृष्टि के आकर्षण से पक्षियों को अपनी ओर खींच लेता है। भेड़िये की दृष्टि से भेड़,

और बिल्ली की दृष्टि से कबूतर इतने अशक्त हो जाते हैं कि वे भाग तक नहीं सकते। उनमें यह आकर्षण शक्ति अधिक तीव्र होती है, जिनके मन में वर्षों से बच्चे प्राप्त करने की लालसा लगी होती है। चिरकालीन लालसा धीरे धीरे अपना पोषण करती रहती है और कुछ दिनों बाद बहुत बलवान् हो जाती है। ऐसे लोगों की नजर का झटका लात मारने से भी अधिक गहरा लगता है। साधु सन्यासी या जिन्हें बच्चों की कोई चाह नहीं होती, उन्हें नजर नहीं लगती। बहुत से लोग अपने कई कई बच्चे होने पर भी संतुष्ट नहीं होते और दूसरों के सुन्दर बच्चों को देख कर मन में ललचाते हैं, उनकी भी नजर लग सकती है।

बच्चों को खिलाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उनके साथ सात्विक रीति से हँसा खेला जाय। विशेष ममता न जोड़ी जाय। खिलाते समय तो खास तौर से यह ध्यान रखना चाहिए कि उनमें ममता के आकर्षक विचार न रखे जाँय। ईश्वर का निर्विकार पुत्र, प्रकृति का सुन्दर पुष्प, कर्तव्य का स्मरण दिलाने वाला सुन्दर एवं जीवित खिलौना ही उन्हें समझना चाहिए। बच्चों को बार बार छाती से लगाना, चूमना, पुचकारना, मेरा प्राण, मेरा जीवनाधार आदि अत्यंत ममता पूर्ण शब्द कहना, यह हरकतें बहुत ही खतरनाक हैं, इनसे बच्चे का जीवन रस सूखता है और वह अल्पायु हो सकता है।

बच्चों को साफ़ सुथरा तो रखा जाय, पर ऐसे तड़क-भड़क के कपड़े और जेवर न पहनाये जाँय, जिससे रास्ते चलते लोगों का ध्यान उनकी ओर खिंचे। सुरक्षा के अन्य नियम भी माताएँ जानती हैं। आकाश की बिजली जब जोरों से कड़कती है तो शरीर की बिजली का भी ह्रास होता है, उस समय माताएँ बालकों को घरों में ले जाती हैं। मेलों में जहाँ भारी भीड़ रहती

मुण्डन संस्कार से पूर्व नहीं ले जातीं। एक दो महीने की आयु का होने तक बालकों को सब लोगों के सामने नहीं लाया जाता। हाथ पाँव में चाँदी आदि धातुओं के कड़े पहनाये जाते हैं, यह सब बाह्य विद्युत से रक्षा करने के उपाय हैं। गर्भ काल के नौ मास पूरे होने से पूर्व ही जिन बच्चों का जन्म हो जाता है उनको और भी अधिक सुरक्षा करनी पड़ती हैं, क्योंकि गर्भ के सातवें आठवें मास में बच्चे के अङ्ग तो पूरे बन जाते हैं, पर उसमें विद्युत का उचित मात्रा में समावेश नहीं हो पाता। सातवें मास में इतनी कम बिजली होती है कि उस पर कोई अधिक आघात नहीं पहुँचता। इसीलिए सातवें मास में पैदा हुए बच्चे अक्सर जीते हैं। ऐसे बच्चे माता की बिजली से अपना काम चलाते हैं। किन्तु आठ मास के बच्चे में बहुत कुछ अपनी बिजली होती है, इसीलिए बाहरी विद्युत के धक्के उसे झँकोर डालते हैं और वह बेचारा अक्सर इस दुनियाँ से कूँच कर जाता है। माताऐं इन अधूरे बच्चों को बाहर के लोगों की दृष्टि से बचाती हैं। यहाँ यह ध्यान रखने की बात है कि माता पिता की नजर नहीं लगती क्योंकि उन्हीं की शक्ति से तो वह उत्पन्न हुआ है, वह एक प्रकार से उन्हीं का तो शरीर है। इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि बच्चा जब तक एक वर्ष का न हो जाय तब तक उसे अयोग्य व्यक्तियों के हाथ में न देना चाहिए और न उसे किसी को चूमने देना चाहिये।

बुरे संस्कार, स्वभाव या स्वास्थ्य वाली धायों द्वारा जब बालकों को दूध पिलाया जाता है, तो निश्चय ही बालक उसके दोषों को भी दूध के साथ पीता है और अपने गुप्त मन में उन्हें धारण करता जाता है। ऐसे बालकों के वे दूषित संस्कार यदि अन्य प्रकार से न हटाये जावें तो वे बड़े होकर अपने मूल बीजों

की भूमिका में विकास करते हैं और बुद्धि, स्वभाव तथा विचारों को अपना कर क्रूर कर्मा बन जाते हैं। माताओं को जानना चाहिए कि यदि वह स्वयं दूध पिला सकने में असमर्थ हों, तो गौ या बकरी का दूध जरा सा गरम करके ठंडा होने के उपरान्त पिलावें।

बालकों की देख भाल रखनी चाहिये और कभी कभी गोद में भी लेना चाहिए, रात को पास सुलाना चाहिए। परन्तु यह बहुत ही बुरी बात है कि उन्हें दिन भर गोदी में लादे रखा जाय। इसका परिणाम ठीक वैसा ही होता है जैसा दिन भर हर घड़ी भोजन कराते रहने का। बच्चों की सहायता के लिए गोदी में लेकर उन्हें अपने शरीर की थोड़ी विद्युत देना चाहिए, परन्तु यदि दिन भर गोद में रखा जायगा तो अजीर्ण हो जायगा और वे वैसे ही कुम्हला जावेंगे जैसे अधिक गर्मी से पौदे मुरझा जाते हैं।

माता के पास जब कई बच्चे हो जाते हैं तो वे बड़े बच्चों को दादी, नानी, भूआ, ताई या किसी बुढ्ढे के साथ सोने के लिये भेज देती हैं। अधिक आयु के मनुष्य अपने से छोटी आयु वालों की विद्युत शक्ति का किस प्रकार शोषण करते हैं, यह पिछले पृष्ठों पर हम बता चुके हैं। उसी नियम के अनुसार बालकों का शोषण शुरू होजाता है। बच्चे दिन पर दिन कम-जोर होने लगते हैं। घर वाले इसका वास्तविक कारण नहीं समझ पाते और अन्यान्य उपचारों में भटकते रहते हैं। विपरीत योनि वालों में विपरीत प्रकार की बिजली होती है, यह भी हम पहले कह चुके हैं। वह भी अपना असर बालकों पर करती है। स्त्रियों के पास लड़कों को और पुरुषों के पास लड़कियों को न सुलाना चाहिये अन्यथा यह शोषण और भी अधिक होने

लगेगा। बच्चे अपनी छोटी सी शक्ति से माता के अलावा अन्य किसी शरीर से विद्युतांश नहीं खींच सकते, वरन् दूसरे लोग उन्हें ही झँझोड़ सकते हैं। नर से मादा में बिलकुल उलटी बिजली की प्रधानता होती है, अतएव दोनों एक दूसरे को खीचते हैं। इस छीन झपट में बेचारे बच्चे ही घाटे में रहते हैं, और उन्हें क्षीण होना पड़ता है। इसलिए ध्यान रखना चाहिये, कि अधिक उम्र के लोग के पास बच्चों को न सुलाया जाय और विपरीत योनि के साथ तो कदापि न सुलाया जाय। यदि माता के पास कई बच्चे हों तो बड़े बच्चों को अलग अलग सुलाने की आदत डालनी चाहिए। हाँ, दो लड़के या दो लड़कियां एक साथ सो सकती हैं। भाई और बहिन का एक साथ सोना भी हानिकारक है, क्यों कि इससे उनकी काम वासना अल्पायु में ही जागृत हो सकती है। बालकों को किसी दुष्ट स्वभाव के मनुष्य के साथ न खेलने देना चाहिये और उन्हें मृत्यु, युद्ध, शोक, रोदन, प्राणियों के वध आदि के स्थान पर न जाने देना चाहिये, क्यों कि उनके कोमल मन पर उग्र घटनाओं का एक आघात लगता है, जिसके कारण भावी जीवन में उन्हें किसी मानसिक अपूर्णता का सामना करना पड़ सकता है।

कई बार माता पिता बच्चे को साथ रखते हुए एक शय्या पर सो जाते हैं, और काम चेष्टाऐं करने लगते हैं। वे समझते हैं कि बच्चा बहुत छोटा है या सोया हुआ है, यह इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता होगा। इसलिये यदि यह भी इस चारपाई पर सोता रहे तो कोई हर्ज नहीं। किन्तु इस अज्ञान का बड़ा बुरा प्रभाव बच्चे पर पड़ता है। असल में बच्चा मिट्टी का टुकड़ा नहीं है, वह प्रबुद्ध मस्तिष्क धारण किये हुए है और डाक्टर फ्राइड के मतानुसार अपने जीवन के आरंभिक दिनों में

इतनी तेजी से ज्ञान प्राप्त करता है, जितना अन्य किसी आयु में नहीं करता। बच्चा चाहे कितना ही छोटा हो और वह सो रहा हो या जाग रहा हो, उस पर माता पिता की काम चेष्टाओं का असर पड़ता है और वह उन बातों को बहुत ही छोटी उम्र में सीख लेता है। देखा गया है कि तीन चार वर्ष के बच्चे आपस में काम चेष्टाएं करते हैं। दस ग्यारह वर्ष की लड़कियों में विकार जागृत होने लगता है, छोटी उम्र की लड़के अनेक प्रकार की लज्जाजनक आदतों में फँस जाते हैं। इतनी छोटी उम्र में उन्हें काम संबन्धी शिक्षा कहीं बाहर से नहीं मिलती। माता पिता ही अज्ञान वश उनमें असाधारण उत्तेजना का बीज बो देते हैं, परिणाम स्वरूप बालक को बाहर से कुछ सीखना नहीं पड़ता, वह अपने आप ही उस शिक्षा को मन में धारण करके पुष्ट करता रहता है और जरा सा होश सँभालते ही उनको क्रिया रूप में प्रकट करने लगता है। छोटे बच्चों में जो प्रवृत्तियाँ जाग उठती हैं, उनके कारण उनको पतन के मार्ग में बलात् प्रवृत्त होना पड़ता है। बड़े बूढ़े कहते हैं कि अब से कुछ समय पूर्व सोलह अठारह वर्ष की उम्र के लड़के धोती बाँधना भी न जानते थे, उन्हें काम वासना सम्बन्धी बिलकुल ज्ञान न होता था पर अब तो इस उम्र के लड़के या तो पिता बन जाते हैं या प्रमेह, स्वप्न दोष आदि की बीमारियाँ लेकर वैद्य जी के दरवाजे की धूलि चाटते हैं। क्या ही अच्छा हो यदि माता पिता बच्चों से दूर रह कर गुप्त इच्छाएं पूर्ण करें। ऐसा करने पर वे अपने बालकों का बहुमूल्य जीवन नष्ट होने से बचा लेंगे।

आत्म तेज बढ़ाने के उपाय

दैनिक जीवन में दूसरों पर प्रभाव डालने की क्षण क्षण पर आवश्यकता पड़ती है। यह कार्य आत्म तेज के बिना अन्य

किसी प्रकार नहीं हो सकता । चहरे पर मुर्दापन नेत्रों में हीनता और वाणी में दीनता लादे हुए, मनुष्य जहाँ जाता है, वहीं दुतकारा जाता है। अशक्ति में याचना का भाव है, जो दुनियां की रुचि के प्रतिकूल है। संसार देने की अपेक्षा लेना पसन्द करता है। तुम्हारे चहरे पर प्रकाश है तो उसकी छाया दूसरों को कुछ देगी और वे प्रसन्न होकर तुम्हारी सहायता करेंगे, किन्तु मलीन चहरा औरों को खाने दौड़ता है, उससे सब लोग बचकर भाग निकलना चाहते हैं। तेजस्वी पुरुष जहाँ जाता है उसका आदर होता है, लोग उसे प्रणाम करते हैं, उसकी बात मानते हैं, विरोधियों की बोलती बन्द होजाती है, और जनता उनकी इच्छानुसार अपना मत बना लेती है। ऐसे ही व्यक्ति कुशल व्यापारी, सफल वकील, धनी किसान, पंच या प्रभावशाली उपदेष्टा बनते हैं। निस्तेज मनुष्य चाहे बड़े बाप का ही बेटा क्यों न हो, रोता हुआ जाता है, और मृत्यु का संदेश लेकर आता है।

आत्म शक्ति, आत्म विद्युत बढ़ाने का सबसे प्रथम उपाय आत्म विश्वास है। अपने को तुच्छ, निर्बल, अयोग्य या नीच समझना एक प्रकार की आत्म हत्या है। अखंड ज्योति बार बार घोषणा करती है कि मनुष्यो! तुम क्षुद्र जीव नहीं हो, सम्राटों के सम्राट परमात्मा के तुम अमर पुत्र-राजकुमार हो। उसने तुम्हारे ऊपर इतना श्रम इसलिए नहीं किया है, कि कीड़ों की तरह जिन्दगी बिताओ और कुत्तों की मौत मर जाओ। अहंकार या घमंड दूसरी बात है। भौतिक वस्तुओं को अपनी समझ कर उन पर गरूर करना अज्ञान है, परन्तु आत्मा को दिव्य स्वरूप की झाँकी कराना आत्म दर्शनहै, पुण्य है, कर्तव्य है, आत्म सम्मान है। अहंकार और आत्म सम्मान की तुलना करना मूर्खता है। अपने अन्दर परमात्मा का पवित्र अंश होने का विश्वास कर लेने पर कोई व्यक्ति आत्मतिरस्कार नहीं कर सकता। अपने को

नाचीज़ समझने का अर्थ है, अपने को परमात्मा से बहुत दूर समझना। "हम परमात्मा के अंश हैं" इस मंत्र में अद्भुत शक्ति भरी हुई है। वेदान्त का प्रमुख मंत्र 'सोऽहम' प्रसिद्ध है, 'मैं' वह (परमात्मा) हूँ, इन भावनाओं को जो जितना दृढ़ करता जावेगा, उसके अन्दर से उतना ही आत्म तेज जाग्रत होने लगेगा। अपनी 'मैं क्या हूं' पुस्तक में हमने विस्तार सहित इस सम्बन्ध में एक अभ्यास बताया है कि अपनी पसलियों के जुड़ाव पर जहां आमाशय है, उस स्थान पर आत्मा के सूर्य समान तेजस्वी बिन्दु की भावना करनी चाहिये और उसके आसपास समस्त विश्व घूमते हुए अनुभव करना चाहिए।

विचारों की पवित्रता ऐसा अमोघ उपाय है, जिससे निश्चय ही आत्म शक्ति का विकास होता है। 'स्वस्थ्य और सुन्दर बनने की अद्भुत विद्या' नामक पुस्तक में हम सिद्ध कर चुके हैं, कि आत्मा का दिव्य तेज कुविचारों के आवरणों से ढका रहता है, यदि काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, पाप, पाखंडके विचारों को हटाकर मनुष्य प्रेम, पवित्रता, दया, और उदारता की भावनाओं को अपना ले तो आत्मा का प्रकाश इन्द्रियों की खिड़कियों में होकर जगमगाने लगेगा और वह पुण्यात्मा व्यक्ति असाधारण तेजस्वी बन जावेगा।

किसी से मिलने जाओ तो उसका आदर करो; परन्तु अपने को उसकी अपेक्षा हीन मत समझो। नम्रता से बात चीत करो, पर गिड़गिड़ाओ मत। जो तुम्हारे लिए उचित आसन हो सकता है उस पर बैठो, पीछे की ओर या नीचे स्थानों पर खिसक कर बैठना बुरा है, किसी को अन्नदाता, प्रतिपालक, हुजूर, प्रभु, महाराजाधिराज आदि शब्दों से संबोधन मत करो, क्यों कि इनमें अपनी हीनता का भाव छिपा हुआ है। सम्बोधन के लिए भगवन्, महोदय, महानुभाव, श्रीमान्, पण्डित जी,

आदि शा... ...क हैं। इनमें दूसरों को प्रोत्साहन तो है, पर अपना अपमान नहीं है। प्रसन्न चित्त होकर बात चीत करना, थोड़ा मुसकराते जाने प्रभाव डालने का बहुत अच्छा तरीका है। थोड़ा मुसकराने में चहरे के आस आस की नसें कुछ इस प्रकार से तनती हैं कि उनमें मस्तिष्क की प्रभावशाली विद्युतधारा खिंच आती है। यह केवल उन नसों में होकर होंट या गालों पर ही प्रदर्शित नहीं होती; वरन् नेत्रों में भी उसका एक बड़ा भाग पहुँच जाता है और वे भी चमकने लगते हैं। वैज्ञानिक अभी पूरी तरह से यह खोज नहीं कर पाये हैं कि हँसने या मुसकराने के समय चहरे पर जो असाधारण विद्युत तेज प्रकट होता है। वह कहाँ कहाँ से किस प्रकार इकट्ठा होता है; परन्तु यह बात यन्त्रों द्वारा निर्विवाद सिद्ध हो चुकी है कि हँसते हुए चहरे में साधारण दशा की अपेक्षा करीब पाँच गुनी विद्युत अधिक होती है। यहाँ दूसरों पर आश्चर्यजनक प्रभाव डालती है और जब लौट कर शरीर में वापिस जाती है, तो रक्त संचार एवं स्नायु मण्डल पर बड़ा हितकर प्रभाव करती है। जब तुम किसी के पास अपना अभिप्राय लेकर जाओ, तो रोनी सूरत मत बनाओ, वरन् अपने को प्रसन्न चित्त बनाये रहो। समता से बात चीत करने के लिए यह आवश्यक है कि झेंपते, हुए न बैठो। दूसरे व्यक्ति की आंखों की ओर दृढ़ता और मृदुलता के साथ देखो। अकड़ कर उद्धतपन के साथ किसी को आँखों से आँखें लड़ाना बुरा प्रभाव डालता है; परन्तु प्रेम और सरलता की भावनाओं के साथ सामने वाले व्यक्ति से बात करने के अर्थ उसे अपने पक्ष में कर लेना, उस पर पर्याप्त प्रभाव डाल लेना है।

मनुष्य को देवता बनाने वाली पुस्तकें

जो ज्ञान युगों के प्रयत्न से मिलता है—
उसे हम अनायास ही आपके सन्मुख उपस्थित करते हैं।

यह पुस्तकें बाजारू किताबें नहीं हैं। इनकी एक-एक पंक्ति के पीछे गहरा अनुभव और अनुसन्धान है। विनम्र शब्दों में हमारा दावा है कि इतना खोज पूर्ण, अलभ्य साहित्य इतने स्वल्प मूल्य में अन्यत्र कहीं भी नहीं मिल सकता।

(१) मैं क्या हूँ ?—आत्म साक्षात्कार करने के कुछ सरल साधन। कीमत ।≈)

(२) सूर्य चिकित्सा विज्ञान—सूर्य की प्रचण्ड रोग नाशक शक्ति द्वारा कठिन रोगों की चिकित्सा। की० ।≈)

(३) प्राण चिकित्सा विज्ञान—मनुष्य शरीर की बीमारियों को बिजली द्वारा अच्छा करना। कीमत ।≈)

(४) पर काया प्रवेश—आत्म शक्ति को दूसरे के शरीर में प्रविष्ट करके उसे इच्छानुसार चलाना। ।≈)

(५) स्वस्थ और सुन्दर बनने की अद्भुत विद्या—आध्यात्मिक सरल साधनों से तन्दुरुस्त और खूबसूरत बनने के उपाय। कीमत ।≈)

(६) मानवीय विद्युत के चमत्कार—शरीर की बिजली से कैसे कैसे आश्चर्यजनक कार्य होते हैं, इसका वैज्ञानिक विवरण। कीमत ।≈)

(७) स्वर योग से दिव्य ज्ञान—स्वरोदय विद्या द्वारा गुप्त और भविष्य की बातों को जान लेना। कीमत ।≈)

(८) भोग में योग—शीघ्र पतन, स्वप्नदोष, नपुंसकता आदि विकारों को योग साधनों से दूर करने की शिक्षा। ।≈)

(९) बुद्धि बढ़ाने के उपाय—बुद्धि को तीव्र करने व स्मरण शक्ति को उन्नत करने के सरल उपाय। कीमत ।=)

(१०) धनवान् और विद्वान् बनने के सिद्धान्त—मनुष्य चाहे कैसी ही बुरी परिस्थिति में क्यों न हो, इन उपायों द्वारा धनी और विद्वान् बन जायगा। कीमत ।=)

(११) इच्छानुसार पुत्र या पुत्री उत्पन्न करना—वन्ध्यापन निवारण और मन चाही सन्तान उत्पन्न करने की विधि। कीमत ।=)

(१२) वशीकरण की सच्ची सिद्धि—ऐसे सद्गुणों की शिक्षा जिनके द्वारा दूसरों के हृदय को जीत कर वश में किया जा सकता है। कीमत ।=)

(१३) मरने के बाद हमारा क्या होता है?—मृत्यु के उपरान्त प्रेत होने, स्वर्ग नरक में जाने, जन्म लेने आदि की खोजपूर्ण चर्चा। कीमत ।=)

(१४) क्या धर्म? क्या अधर्म?—दार्शनिक, व्यावहारिक और वैज्ञानिक दृष्टि से धर्म की मीमांसा। की० ।=)

(१५) गहनां कर्मणो गतिः—दुष्ट लोग सुखी और धर्मात्मा दुखी क्यों देखे जाते हैं? कर्म फल कैसे मिलता है? भाग्य क्या है? आदि का तात्विक दर्शन। कीमत ।=)

(१६) ईश्वर कहाँ है? कौन है? कैसा है?—ईश्वर के स्वरूप और उसकी उपासना का मर्म भेद। ।=)

नं० ८ तक की पुस्तकें छप कर तैयार हैं। शेष अगस्त सन् ४१ तक छप कर तैयार हो जाँयगी।

इन पुस्तकों की एक-एक प्रति अपने पास ज़रूर रखिये।

पता—मैनेजर 'अखंड ज्योति' कार्यालय, मथुरा।